Vol . 0 1 - No 12

तंत्र कौमुदी

दुर्लभ लघु प्रयोग और नवग्रह महाविशेषांक

Twelfth Issue – August 2012

Tantra kaumudi

पियूषभानु: प्रवर : प्रभ्नद्र: प्रभावक :| प्रबुद्ध : पुरुष व्याघ्र :प्रयतात्मा परंतप ||

भक्तोदय : भविष्णुश्च भवोपायः भयंकर : | भक्तेश्वर: भद्र होम: भगवती प्राणवल्लभ : ||

तस्मै श्री सदगुरुदेव चरण कमलेभ्यो नम :||

प्रबुद्ध और अमृतवर्षी,मर्यादित और प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी सदगुरुदेव निखिल, पुरुषों मे व्याघ्र के सामान हैं ,प्रबलतम वाधाएं भी उनको देखने मात्र से विचलित हो कर मैदान छोड़कर पलायन कर जाती हैं, चाहे कोई भी क्षेत्र हो ,आप अपराजेय हैं प्रबुद्ध हैं संयमी हैं.माता भगवती के प्राण प्रिय पूज्य सदगुरुदेव किसी भी साधक या शिष्य को भाग्य के भरोसे जीने कि सलाह नही देते, उनकी अपनी मान्यता हैं की मंत्र तथा तंत्र साधना से भाग्य को बदला जा सकता हैं.दुष्ट ग्रह के प्रभाव को पूर्णतया समाप्त किया जा सकता हैं. हे सदगुरुदेव मैं आपके श्री चरण कमलों मे बारम्बार नमन करता हूँ .मैं आपकी ही शरण मे हूँ .

Iluminating, divine majestic and the most influential personality, Sadgurudev Nikhil is termed as tiger amongst whole human kind. Any type of difficulty runs away just by having glimpse of him. Though it any damn field you are Invincible, you are Irradiate, Spartan..The beloved of Mata Bhagvati, revered Sadgurudev never suggest any one or his any disciple to rely on fate and live life. His assumption is via Mantra and Tantra Sadhna fate can be change. The malefic of planets could also be destroying off completely.O my lord... my Sadgurudev, I bow myself at your holy divine feet again and again. I am at your refuge..

.

Dedicated

To

The Divine Holy Lotus Feet of
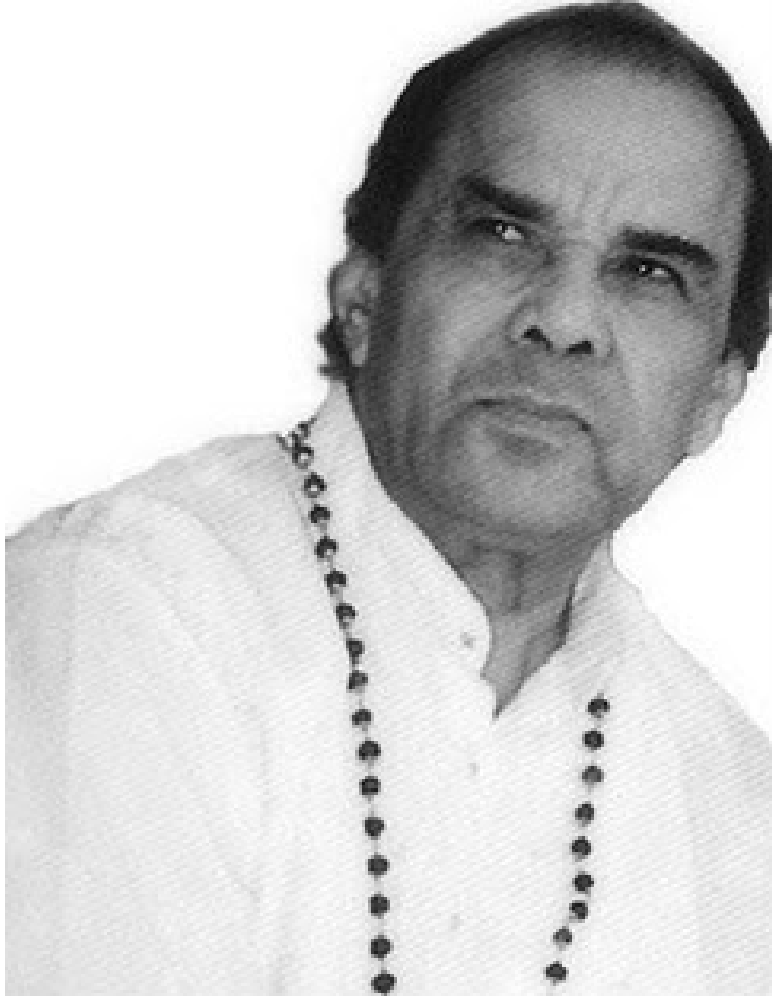
Param Poojya Sadgurudev Dr. Shri Narayan Datt Shrimali JI

(Paramhansa Swami Nikhileshwaranand ji)

Tantra kaumudi e-magazine

Nikhil Para Science Research Unit

Can be contacted through

http://nikhil-alchemy2.com

www.Nikhil-alchemy2.blogspot.com & Nikhil_alchemy yahoo group

TEAM MEMEBERS OF TANTRA KAUMUDI E- MAGAZINE

Editor *Associates editor s And Creative Designer*

nikhilarif@gmail.com raghunath.nikhil@yahoo.in anuwithsmile@rediffmail.com
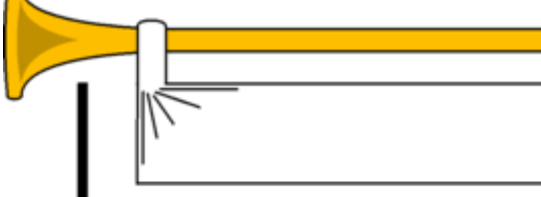
Name of the Articles

- General rules
- Editorial
- Sadguru Prasang
- Sammohan yukt Ganesh prayog
- Laghu sadhnaye ..inki aavshyakta hi kyon ?
- Laghu sadhana- kuch tathy
- Sabar dhan prapti prayog
- Shatru vaadha nivaran prayog
- Vashikaran prayog
- Grih sukh shanti prayog
- Bhavan siddhi aur Vahan siddhi prayog
- Vidya prapti prayog
- Aayurved aur chikitsa ke kuchh jaanne yogy tathy
- Kaary siddhi hetu Raahu sadhana
- Samst partikulta aur charm rogon ki nivriti hetu Roudr ketu sadhana
- Vyaapaar aur buddhi ki unnati hetu Budh sadhana
- Utsaah aur umnag hetu Mangal sadhana
- Sarv siddhi prad navgrah sadhana
- Swarna Rahsyam- part -12
- Saral Dhandayak mansik Lakshmi sadhana
- Totaka vigyan
- Ayurveda
- In The End

General Rules :

This free e magazine available only to the follower register in the blog Nikhil-alchemy2.blogspot.com. and also nikhil-alchemy groups memeber . the article appear here, are /will be based on the divine wisdom of **SadGurudev Dr Shri Narayan Dutt Shrimali ji** , and his sanyasi shishyas . we as a your fellow guru brothers, here just providing words to their thought. For the address of these mahayogi's are not known to us, as they all are wondering saints.

The sadhana and mantra's appeared /mentioned in any article can be practiced ,on your own responsibility, to get success in sadhana you can have Diksha from anywhere where your faith,devotion and trust calls . for sadhana articles needed for that , you can purchase from any place ,as per you faith and trust suited to you ,

Please do not ask us for any type of sadhana related materials, and also for Diksha related Queries at any cost /condition , we does not sell any sadhana material (yantra , rosary etc).

Since sadhana is a very complex matter, for success and failure of any sadhana mentioned in any article here , many things required , to get success . that's why ,we do not take any responsibility in this connection. we also request, not to do any sadhana ,which is adverse and not permitted as per legal, morel, society belief.

This e magazine will be published monthly. You are receiving this magazine means that you are accepting the terms and conditions . at any time , you can withdraw your registration . this e magazine just a forum to share knowledge between us (Sadgurudev ji's shishyas - All guru brother and sisters),

if still any one raises questions regarding the authenticity of articles published here , for them, treat all articles just as a fiction and a ear say.

......

प्रिय आत्मजनों,

निखिल प्रणाम,

शिवः शकत्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं

न चेदेवं देवो न खलु कुशल स्पन्दितुमपि॥

शक्ति के बिना सृष्टि स्थिति संहार करने मे असमर्थ शिव,शक्ति की सहायता से सभी कुछ करने मे समर्थ हो जाते हैं .

इसी शक्ति तत्व को जो साधको के अंदर सुसुप्त अवस्था मे हैं, उसे जाग्रत कर उन्हें स्व बोध कराने हेतु ही साधनाओ का सृजन हुआ .आज के व्यस्ततम समय और इस युग मे अनेको के सामने यह समस्या आती हैं कि वे चाह कर भी बृहद साधना नही कर पाते हैं. उनकी यह विवशता देख कर ही सदगुरुदेव जी ने अनेको स्व अनुभूत अल्प समय की साधनाए हम सब के सामने रखी हैं .सदगुरुदेव जी के आत्मस्वरूप हमारे अग्रज सन्यासी भाई बहिनों के निर्देशन पर ही आपके समक्ष यह महाविशेषांक तीव्रतम प्रभाव देने मे समर्थ पर अत्यंत सरल और कम समय की साधनाओ से युक्त हैं .

साधक को हर समय साधनामय होना ही चाहिए तभी उसके साधनात्मक जीवन की ऊर्जा लगातार उसके अंदर अपने स्व स्वरुप मे रह सकती हैं, इस अंक मे आ रही साधनाए सरल हैं और व्यर्थ का वाक् जाल न रचते हुये, आपके सामने यह महाविशेषांक उपस्थित हैं ,आप सभी इसमें आयी हुयी साधनाओ का पूर्णता से लाभ उठाये ,साधना सफलता को स्वयम अनुभव करे , किसी अंक का मूल्य न तो उसकी सजावट से, न ही उसके पृष्ठ संख्या से वरन उसमे आई हुयी साधना और उन साधनाओ को स्वयं द्वारा सफलता पूर्वक करने से ही आँका जा सकता हैं .सदगुरुदेव जी ने कई बार हमें बताया कि “पोथिन देखी से आखन देखी” कहीं जायदा महत्वपूर्ण हैं.

3

आप सभी इन सभी साधनाओ को अपने जीवन मे एक एक करके समपन्न करें और अपने भौतिक जीवन को सवारें क्योंकि एक ठोस भौतिक जीवन आधार पर ही एक सुद्रढ़ आध्यात्मिक जीवन का निर्माण संभव हैं ,यह इसलिए क्योंकि हमारे सदगुरुदेव ने हमें कभी भी पलायनवादी विचार धारा नही बल्कि परिस्थितियों से स्वयम लड़ने का हौसला सदैव दिया हैं और इस जीवन के महाभारत को जीतने मे साधना आपके लिए एक अचूक दिव्यास्त्र का काम करेगी .

साथ ही साथ हाल ही हम सभी जबलपुर मे एक दिवसीय सेमीनार जो अप्सरा यक्षिणी साधना के गोपनीय सूत्रों पर आधारित रहा, अनेको विरोध और प्रतिकूलताओ के मध्य भी पूर्ण सफलता के साथ यह समपन्न हुआ ,आप सभी का स्नेह और विश्वास हमें और भी अधिक श्रम करने के लिए अतिरिक्त उर्जा प्रदान करता हैं .

नवग्रह से सबंधित कुछ साधनाए आपके सामने इस अंक मे हैं पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य हैं वह यह की इन **ग्रहो की मातृका को अनुकूल करने से सबंधित एक अत्याधिक गोपनीय साधना** मैं इस अंक मे देने का विचार कर रहा था ,तभी विचार आया की क्यों न इस अति महत्वपूर्ण साधना को ब्लॉग पर ही दिया जाए जिससे की अनेक भाई बहिनों को लाभ मिल सकें तो यह बेहद महत्वपूर्ण साधना अब आपके सामने ब्लॉग पर आएगी ,साथ ही साथ अगला तंत्र कौमुदी का अंक जो कि तेरहवां अंक होगा वह "**मुस्लिम तंत्र और वानस्पतिक तंत्र महाविशेषांक**" के रूप मे आपके सामने आएगा .

मैं यहाँ पर अंपने भाई **अनुराग सिंह गौतम निखिल** और भाई **रघुनाथ निखिल** के मेरे साथ लगातार, हर पग पर दिए जा रहे साथ और सहयोग के बिना यह अंक इस रूप मे आपके सामने नही आ पाता. मैं यहाँ पर अपने **समस्त NPRU परिवार** की ओर से आप सभी भाई बहिनों के इस स्नेह का हृदय से स्वागत करता हूँ और आप सभी के इस पथ पर साथ देने की इस भावना से अनुप्राणित हो कर, निश्चय ही हम सभी शिष्य शिष्या ,सदगुरुदेव जी के स्वपन को पूर्णता देने के लिए कृत संकल्प हैं और हम सभी सफल होंगे ही .इसी पूर्ण विश्वास के साथ ...

"**निखिल प्रणाम**"

सदैव से आपका ही भाई

आरिफ खान निखिल
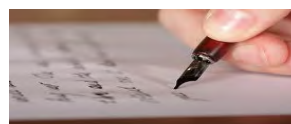
SADGURUDEV - PRASANG
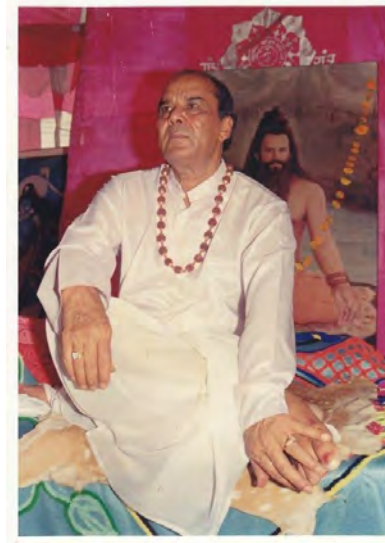
नवग्रह स्थापन

यह मैसूर की घटना हैं, वहां करणराज जी ने मूर्तिस्थापन से पहले यज्ञ रखा था जिसमे उत्तर और दक्षिण भारत के विद्वानों को बुलाया था. उन्होंने वेदी के साथ प्रत्येक ग्रह का स्थापन अलग अलग किया था.

जब ग्रह स्थापन हो चुके और यज्ञ प्रारंभ हुआ विशेष मंत्रो से ग्रहों का आवाहन व स्थापन प्रयोग सम्पन्न हुआ. उस समय सेठ जी भी पूज्य सदगुरुदेव को लेकर यज्ञ मंडप मे पधारे. यज्ञ मे एक सन्यासी को आया देख कर दक्षिण भारत के पंडितो ने नाक भौं सिकोड़े, शायद उन्हें उनका आना अच्छा नही लगा होगा या उन्हें भय रहा होगा कि कहीं यह कोई त्रुटि न निकाल दें.

सदगुरुदेव ने पूंछा"कर्मकांड के अनुसार सारे कार्य संपादित हो चुके?"

उन पंडितो मे श्रेष्ठ माधव प्रसाद जी ने कहा "यह हम पंडितो का कार्य हैं ,प्रवचन करना नही. "

मुझसे कहा " तु जाकर जो सूर्य ग्रह स्थापन वेदी हैं, उसे हाथ से स्पर्श कर, जिससे ज्ञात हो सके कि वहां सूर्य स्थापित हैं भी या नही "

यह बात जोर से ही कहीं थी, इसलिए सभी पंडितो ने सुना, मैंने उठ कर सूर्य स्थापन वेदी को छुआ तो मुझे कुछ भी विशेषता अनुभव नही हुयी.

पंडितो ने कहा " वहां अनुभव क्या होना हैं हमने मंत्रो के सथ सूर्य का आह्वाहन और स्थापन किया हैं फिर षोडशोपचार पूजन कर उनको संस्थापित किया हैं"

सदगुरुदेव ने कहा "आपने जरुर सूर्य का आह्वाहन किया होगा पर सूर्यवहां पर स्थापित तो नही हुये, अगर उस वेदी पर सूर्य स्थापित हुये होते तो इसके स्पर्श करने पर सूर्य के होने का आभास तो मिलता"

माधक प्रसाद जी ने कहा " आभास क्या मिलेगा ? आभास क्या होता हैं."

सदगुरुदेव जी ने सेठ जी से कहा " आप एक हाथ से सूर्य स्थापित वेदी और दूसरेहाथ से चंद्र स्थापित वेदी को स्पर्श करके मुझे बताये कि आपको कैसा लग रहा हैं"

सदगुरुदेव जी की आज्ञा पाकर यज्ञ संचालक और प्रबंधक सेठ जी ने दोनों वेदियों को स्पर्श किया उन्होंने कहा भी कि कुछ भी अतिरिक्त अनुभव नही हो रहा हैं.

सदगुरुदेव जी ने कहा " वहां केबल चावलकी ढेरी ही रखी हुयी हैं. वहाँ न तो सूर्य स्थापित हुये हैं न तो चंद्र बाकी ग्रह भी स्थापित नही हुये होंगे "

माधव प्रसाद जी की त्योरियां चढ गयी और लगभग चीखते हुये से बोले" मैं पंडित हूँ और पिछले चालीस सालो से यह कार्य कर रहा हूँ, मुझे चेलेज देने वाला कोई पैदा ही नही हुआ हैं."

स्वामीजी ने अत्याधिक नम्रतापूर्वक जबाब दिया" निश्चय ही आप विद्वान और श्रेष्ठ पंडित हैं, मैं तो यह कह रहा हूँ कि उस वेदी पर ग्रह स्थापित ही नही हुये और न वे आये हैं, जबकि मंत्रो का प्रयोजन तो यह हैं कि जिसका आह्वान किया जाए वह उपस्थित हो. "

इसके बाद सदगुरुदेव जी ने सूर्य मंत्रो से उनका आह्वान किया और उसी वेदी पर स्थापित किया. तत्पश्चात यजुर्वेद के "इमनदेवा" मंत्र से चंद्रका आव्हान किया और उसे उसकी वेदी पर स्थापित किया .

माधवप्रसाद जी ने सूर्य वेदी के समीप पहुँच करउसके मध्य मे ज्यों ही अँगुलियों से स्पर्श किया त्योंही उनका हाथ झुलस गया हाथ के रोम जल उठे और कोहनी तक हाथ ऐसा हो गया जैसे अग्नि मे हाथ चला गया हो . और उन्होंने लगभग चीखते हुये हाथ हटा लिया.

सारे उपस्थित श्रोता स्तब्ध थे, उन्होने पहली बार अहसास किया कि यदि सही ढंग से मंत्र उच्चरित हो तो देवता आज भी उपस्थित होते हैं, पंडित जी पर मानो घडो पानी पड़ गया था.

फिर सदगुरुदेव जी ने सेठ जी को कहा "आप चंद्र वेदी पर जाकर स्पर्श कर देख ले कि वहां चंद्र स्थापित हैं या नहीं?"

सदगुरुदेव जी की आज्ञानुसार सेठ जी उठे और उन्होंने ज्यों ही चंद्र वेदी को स्पर्श किया उन्हेंऐसा लगा उनका मानो हाथ बर्फ मे चला गया हो उस एक सेकेण्ड मे ही हाथ का खून जमता हुआ महसूस हुआ उन्होंने कहा "बहुत ठंडा हैं.हिमवत "

उनके साथ हम लोग भी उठ खड़े हुये और लोगों के आग्रह के बाबजूद हम मैसूर से प्रस्थान कर गए

-मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं से साभार सहित

****
****

Navgrah Sthapan..

This was Mysore occurrence were Karanraaj ji organised Yagna ritual before establishment of idol and northern and southern Indian scholars were invited. Along with altar he established individually every planet.

When planet establishment finished Yagna started by special mantras calling and establishing of planets started on. Then Seth ji came along with Sadgurudev ji. While noticing an ascetic coming in yagna, all Pandit expressions got changed, may be they were not expected such guest and didn't liked his entry. Or maybe they all were scared may be he will figure out their mistake.

Sadgurudev ji asked "do as per karmkaand does every process is done?"

Amongst all those Pandits, the best one - Madhav Prasad ji said, "This is our work, nor giving just speeches".

Then he said to me, "Just go and check whether Sun altar established or not by touching it you will know"..

He said it loudly so every pandit could hear his voice, so I stood up and after touching altar I couldn't find any special feel.

Then all pandits said, "what experience you will get over there, we established and called god Sun with mantras, then did Shodashopchar worshipping..(the worship ritual done with 16 pious things) and ultimately installed them."

Sadgurudev said, "You definitely may have done calling process, but God Sun had not installed there, if they would have installed over there then after touching that space, some inkling would have been felt. But nothing felt."

Madhav Prasad Ji said, "What inkling can get? What the hell this inkling is?

Sadgurudev ji said to Seth ji, now you do one just touch Sun altar by one hand and Moon altar by other hand and tell me the difference of feel.

After getting Sadgurudev order, the Yagya operator and the manger Seth ji touched both the altars. Then they said nothing special feel they can't felt over there.

Sagurudev ji said, "There only rice agglomerate is placed, their neither Sun is established nor moon and even not the other planet have been established."

Madhav Prasad ji's eyebrows got stretched and almost screamingly he said, "Since 40 years I have been in this field, no body born till now who could challenge my work."

Swami ji replied humbly, “definitely you are intellect and best Pandit, but my sentence is just that nothing has been installed on that agglomerate nor they have come there. Though, Mantras purpose is to call the exact god which mantra has been chanted.”

Thereafter via Sun mantras Sadgurudev called him on that agglomerate and established them too, then from Yajurveda’s “Emaandeva” mantra he then, called moon and established him on agglomerate.

When Madhav Prasad ji reached near Sun altar and touched in middle he got burned feeling, his hand was burned till elbow. This happened in fractions of seconds. It seemed that he put his hand in fire and reacted in same manner. And approximately screamingly he took hands off from that altar.

Everybody present over their were wonderstruck, for the first time in life they all experienced that if in exact desired manner if Mantras are chanted then god gives their appearance today also. Pandit ji’s condition was like tons of water showered on him and he was motionless.

Then Sadgurudev ji said to Seth ji, “you please check whether Moon has been established over there or not?”

After getting Sadgurudev’s permission, I went and checked, the moment I put my hand on Moon agglomerate my fingers got frozen, I felt like I put my hand in ice and blood became frozen. Then I said, it damn cold exactly like ice.”

Then we all stood up and beside everybody insistence we left from Mysore.

From mantra tantra yantra vigyan

सम्मोहन साधना और समस्त चराचर को सम्मोहित करने मे समर्थ गणेश साधना

sammohan sadhana yukt SHRI ganpati PRAYOG

भगवान गणपति के सम्मोहन प्रदायक स्वरुप से सम्बंधित एक सरल साधना

भगवान गणेश का नाम ही विघ्न हर्ता हैं और सभी इस बात से इस तथ्य से सुपरिचित हैं कि जब तक भगवान गणेश का आशीर्वाद ना मिल जाए जब तक उनकी प्रसन्नता न मिल जाए सिद्धि कैसे प्राप्त हो सकती हैं ?क्योंकि रिद्धि और सिद्धि तो उनकी सहचरी हैं .अतः हर साधक यह जानता हैं कि उनकी कृपा न केबल साधना जगत मे बल्कि सामन्य भौतिक जगत मे भी उतनी ही आवश्यक हैं ही. इस बात को कम करके नही देखा जा सकता हैं .यहाँ तक कि कुण्डलिनी जागरण मे मूलाधार चक्र को भी गणेश चक्र भी कहा गया हैं.

जब बात सम्पूर्ण जगत को वशीभूत करने की हो तो क्यों नही इसमें अप्सरा यक्षिणी भी आएगी.तो जिन साधको को इस ओर रूचि हैं वह इस मंत्र का जप करें निश्चय ही अगर वह अप्सरा यक्षिणी साधना मे मेहनत करते हैं और सारे आवश्यक सूत्र ज्ञात कर लेते हैं तो निश्चय ही उन्हें सफलता प्राप्त होगी.

सम्पूर्ण देव शक्ति के समूह वे एक मात्र प्रतिनिधि हैं एक उनकी प्रसन्नता से एक उनकी पूजा से सभी का पूजन संभव हो जाता हैं .और आज के जीवन मे सफलता पाने के लिए एक आकर्षक व्यक्तित्व का होना बहुत जरुरी हैं पर सभी के पास तो ..पर अपने व्यक्तित्व मे चुम्बकीयता लायी जा सकती है इस अर्थ मे यह साधना अपने आप मे एक गहन अर्थ रखती हैं .

कोई विशेष पूजन विधान इस साधना मे नही हैं पर जो भी अपने मे एक ऐसी चुम्बकीयता लाना चाहते हो उन्हें तो अपने दैनिक पूजन मे इस साधना को शामिल कर ही लेना चाहिए.

एक, पांच या ग्यारह माला जप करते जाए और कुछ ही दिन मे स्वयम वह अपने व्यक्तित्व मे परिवर्तनमहसूस करें लगेंगे .

मन्त्र:

वक्र तुंडैकदंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपते वरवरद सर्वजन मे वशमानय स्वाहा ||

==

Sammohan Sadhna (hypnotism Sadhna) and the sadhna which is capable to hypnotize every particle of world - The Ganesh Sadhna

The other name of **Lord Ganesha** is **Vighna Harta** – one who takes away all obstacles and everybody is well aware about this fact until the blessings of lord Ganesh is not earned, until his happiness his not achieved, no siddhis can be achieved as Ridhhi and Siddhi are his associates. Therefore every sadhak knows very well that not only in sadhna world but also in materialistic world the importance of lord Ganesha is required to start or get success in any type work. So this cannot be taken lightly. Even in Kundalini activation process the first chakra i.e. Muladhar Chakra is also known as Ganesh Chakra.

When it comes to hypnotize whole world then why not Apsara Yakshini would be considered. Then whoever sadhak are interested in this side then they should chant this mantra parallel of all those steps of Apsara Yakshini sadhna and should figure out the necessary facts, success is guaranteed.

He is the only representative amongst the whole DevShaktis. Only after doing his worships any other worship is possible and nor fructified. In today's life it's very essential to have attractive personality. But everybody doesn't have… but to intact magnetism in our personality.. And in this context this sadhna keeps keen importance in it.

Nothing special ritual need to perform but whosoever wants to intact magnetism in their personality, and then they should include this sadhna in their daily worship rituals.

1, 5 or 11 rosaries mantra jap can be done. In some days you will see miraculaous change in your personality..

Mantra –

Vakra tundeikandanstraay kleem hreem shreem gam ganpate var varad sarv jan me vashmanay swaahaa||

Why laghu sadhana ? Preliminary Introduction....

एक प्रारंभिक परिचय ...

साधनाओ के अमृत सागर मे लाखों करोड़ों हीरे मोती जवाहरात हैं और इस तथ्य से सभी परिचित हैं की ज्ञान के इस अनन्त सागर की न कोई सीमा हैं न कोई थाह .यह तो नित नूतन और विस्तारित होने वाला हैं .मानव जीवन की यह थाती हैं हमारे पूर्वजो के ज्ञान विज्ञानं और उच्च प्रज्ञा का एक अद्भुत अनुपम उदहारण कि हम मृत्युंजयी सस्कृति के निवासी हैं .

पर यह भी सत्य हैं कि समय परिस्थितियाँ और काल चक्र और हमारे पिछली कुछ पीढ़ियों कि उपेक्षा और विदेशी आक्रमणों के कारण यह विद्या नष्ट प्राय सी हो गयी ,हज़ारो लाखो ग्रन्थ लुप्त हो गए.

समाज द्वारा उपेक्षा और उचित पात्र न मिलने के अभाव मे अनेको मनीषियों ने तंत्र मर्मज्ञो ने अपने आप को छुपा लिया .फलस्वरुप आज अब अनाधिकारियों द्वारा परिस्थितियों का लाभ उठाकर तंत्र के नाम पर जो कुत्सिक खेल हो रहे हैं जो व्यभिचार और पाखण्ड का खुला खेल चल रहा हैं सारा समाज स्तब्ध हैं,और इसमें समाज के अपने दोष को भी नकारा नही जा सकता हैं , जब वह योग्य पात्रो का सम्मान और उनके ज्ञान को आत्मसात नही करेगा तो यह तो उसे देखना ही पड़ेगा . पूज्यपाद सदगुरुदेव के अनथक परिश्रम से आज कौन नही वाकिफ होगा ,सारा जीवन उन्होंने अपना होम कर दिया सिर्फ इस उदेश्य के लिए कि ये सनातन संस्कृति की साधनात्मक धरोहर जिसे कोई भी धर्म , जाती और अन्य विभाजन कारी बातो से बाँट नही सकता हैं , पुनर्जीवित/ स्थापित हो , और सदगुरुदेव ने यह कार्य पूर्णता के साथ किया भी लाखो लाखो साधको को उन्होंने अपनी अमृत वाणी से सिंचित किया . उन्हें अपनी स्व प्राण ऊर्जा से दीक्षित किया और यही ही नही सैकड़ों हज़ारो को साधना मे सफलता भी दिलाई . और यह सिद्ध कर दिखाया कि एक समर्थ व्यक्तित्व , जो सदगुरुदेव पदपर आसीन हो.वह किसी भी वाधा से रुकता नही ,घबराता नही बल्कि काल को भी अपने इशारे से चलने को बाध्य कर देता हैं .

और उन्होंने लाखो लाखो दीप प्रज्ज्वलित कर दिए , जो कि अपने आप मे एक मिसाल हैं कि एक सक्षम समर्थ व्यक्तिव्य क्या होता हैं ,सदगुरुदेव जी ने पूर्णता के साथ हर ज्ञान को हमारे सामने रखा और न केबल प्रवचन और किताबो न के माध्यम से बल्कि प्रायोगिक रूप से शिविरों की एक निर्बाध श्रंखला भी उन्होंने प्रारंभ की जहाँ वे स्वयं इन बातो को साधको और शिष्यों के सामने रखते आये.

सदगुरुदेव जी के अद्भुत,अमृत ज्ञान की कोई सीमा ही नही ,उनके ज्ञान के अमृत कण तो उन्होंने सारे विश्व मे फैला दिए ,उनका यह अमृत वचन की एक भी मेरे सच्चे शिष्य को ज्ञान की कमी नही होगी मैं हर क्षण उनके साथ रहूंगा यह आज हर शिष्य जानता हैं और अनुभव भी करता ही हैं.

एक ओर तंत्र मे जहाँ उच्च स्तरीय साधनाए हैं जो काफी लंबी हैं जिनमे श्रम भी बहुत लगता हैं और ऐसा होगा ही क्योंकि ये साधनाए मजाक की वस्तु नही हैं बल्कि सबसे जयादा गंभीर और कर्म का प्रतीक हैं इन्हें किसी भी हाल मे हलके से लेना केबल असफलता से दो चार होने का दरवाजा खोलने के समान हैं.पर यह भी सत्य हैं कि आज किसी भी व्यक्ति के पास समय नही हैं,और वह साल दो साल या चार छः महीने लगतार साधना नही कर सकता हैं पर वह साधना करना चाहता हैं इस हेतु तंत्र आचार्यो ने हमारे महा ऋषियों ने पहले से इस बात को ध्यान मे रख कर अनेको सरल विधान सामने रखे जो कि सरल हैं और सफलता भी प्रदान करने मे समर्थ हैं.और आज के युग की ये आवश्यकता भी हैं कि व्यक्ति पहले समय निकाल कर इन प्रयोगों को सम्पन्न करे और फिर जैसे जैसे उसका विश्वास एकाग्रता बढती जाए वह बृहद साधनाए भी सफलता पूर्वक कर सकता हैं इसी तथ्य को ध्यान मे रख कर सरल लघु प्रयोग इस बार के इस तंत्र कौमुदी का प्रमुख विषय हैंऔर टोने टोटके भी कहीं न कहीं अपना एक आधार रखते हैं वही एक दिवसीय और द्वि दिवसीय और त्रि दिवसीय साधनाए का अपना ही एक महत्व हैं उसे कम नही आंका जा सकता हैं.

इस अंक मे हमने जो सरल साधनाए दी हैं वह या तो हमें सदगुरुदेव जी से या उनके सन्यासी शिष्य शिष्याओ से या किसी अन्य सिद्ध से मिली हैं पर पूर्ण प्रामाणिक हैं अतः उसका प्रयोग करसफलता पाई जा सकती हैं अगर हमें अपने आप पर साधना पर और अपने प्राणाधार सदगुरुदेव पर पूर्ण विश्वास हो तो.

साथ ही साथ मानव जीवन पर ग्रहो और नक्षत्रो का बहुत प्रभाव पडता हैं.इन ग्रहों नक्षत्रो से सम्पूर्ण विश्व गतिमान हैं उसके प्रभाव के अंतर्गत हैं पर जब इनकी कुपि् ता मानव को झेलने पड़ती हैं तब..

ग्रह भले ही एक निर्जीव पिंड प्रतीत हो पर उनसे निसृत होने वाली किरणे हर मानव को प्रभावित करती ही हैं क्योंकि इस विश्व का हर कण किसी न किसी रूप मे सभी से संयुक्त हैं .इस कारण इस तथ्य की उपेक्षा नही की जा सकती हैं और दूसरा कारण यह हैं कि सम्पूर्ण विश्व को गतिमान बनाये रखने और गतिशील रखने मे कर्म सिद्धांत की प्रमुख भूमिका हैं और इसको सुचारू रूप से ,नियमित रूप से रखने के लिए ग्रह अपनी भूमिका सटीकता से निभाते हैं .पर इससे क्या ... जब हम लगातार परेशानी या तकलीफ झेल रहे हो तब...

तब क्या साधना ही एक मात्र उपाय शेष रहता हैं जो सटीकता से ही परिणाम देता हैं जीवन को निष्कंटक बनाने और अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए और जो भी कमियां और न्युनताये जीवन मे हैं उनको समाप्त कर कर एक पूर्णता युक्त जीवन जीने के लिए. इस हेतु हमने अनेको साधनाए इस बारे मे दी हुयी है.आपको जो भी साधना उचित लगे आप उसका प्रयोग करें.और जीवन को उच्चता की ओर अग्रसर करें ,सामान्यतः जब भी जीवन संकट की ओर अग्रसर होता हैं या परिस्थितियाँ कठिन होती हैं तब व्यक्ति इनसे निजात पाने के लिए हर संभव कोशिश करता हैं पर वह साधनाओ की गंभीरता और उच्चता और प्रभाव्कता को बहुत कम आंकता हैं इस कारण उसका श्रम और धन दोनों ही बहुत नष्ट होता हैं. इस हेतु हमने नव ग्रह से सबंधित साधनाए इस अंक मे दे कर इस अंक को पूर्णता के साथ एक श्रेष्ठ अंक बनाने की पूरी कोशिश की हैंपर जब बात साधनाए की हो ,खासकर लघु साधनाये... तो इस बात को बहुत ध्यान से समझना चाहिए कि इन्हें वस् एक या दो दिन का न माना जाए वरन इनको मन लगाकर तब तक किया जाए जब तक आपको पूर्ण सफलता नही मिल पाती हैं. कई बार ये हो सकता हैं की कभी एक बार मे सफलता नही भी मिले पर अगली बार सफलता मिल जा सकती हैं अगर एक उचित मार्ग दर्शन और आपके प्रयास लगातार एक सही दिशा मे हो और आप इनकी महत्वता समझने की कोशिश करें...

==

Introduction

In divine ocean of Sadhnas we embraced with many precious stone pearls and jewelries in lakhs and crore, and everyone is well aware about this fact that no one can measure the depth and limit of this divine knowledge.

This is the earnest of human life and a wonderful example left by our ancestor that they had such intellectual pre vision for us to get an opportunity to reside in era of the culture were one can conquering death. (Mrityunjayi Sanskriti)

But this is also truth that time, condition and a wheel of time and ignorance of some past generation and some foreign invasion this study has become vanished, in number of thousands lakhs this texts are disappeared, from the ignorance by society and lack of right candidates, many saints, tantric scholars have hided themselves. In resultant those who are not authentic had taken the benefit of condition and playing such filthy games on name of Tantra which is full of hypocrite and adulterer. Due this whole society is numbed. But the fault of society is also not ignorable. If sociality doesn't accepts and respects the knowledge of right persons then this situation may arose again n again. If we say, may be hardly some people are there who didn't know about the incessant efforts of revered Sadgurudev, he sacrificed his whole life for only one purpose that eternal traditional methodology of Sadhna should be in such way preserve that no one could divide it in on ground of caste, religion or any type of discrimination. And it should get reestablish and relived. He did it complete sense. He nurtured lakhs of sadhak by his divine eternal voice. He gave Diksha by his divine Praan urja(energy) and not only this he bow success to many sadhaks in their sadhna. He then proved that a capable person who is placed on Sadgurudev position can face any type of obstacle and alone can handle it, nor he get frightened rather he bind time to act according to his wish.

And enlighten lakhs of lamps in his divine sunshade of adoration, which is nonetheless than any paragon that what a capable caliber person is in real sense.., with complete sense he put forth whole knowledge in front of us. Not only via his speeches but by his hand written books and even in practical manner in long camp series he expressed this divine variety of knowledge.

There is no limit of Sadgurudev's divine and wonderful knowledge. He spread each and every particle of his endless divine knowledge in all over universe. Any of my real disciples would not be lack of knowledge. I will remain every second with them. And this fact is accepted by each and every one and experiences also.

At one side where there is high level of Tantra Sadhnas which are lengthy in procedures which contains hard work and this is about to happened as they are not matter of joke. Rather they are very serious and symbol of Karma, and taking it lightly means keeping just two three steps away from door of failure. But this is also fact that nobody has sufficient time and he/she can't indulge in a year or six months sadhna span. But where he wants to do sadhna, in solution for this our great Tantra scholars find out the midway previously and kept this fact in mind while creating such and put forth such easy procedures as per current time which are capable enough to provide us success also. And it todays need also before person used to take out some time and attempt such processes. Day by day as and when you get success in preliminary stage then you can go for long sadhnas also. And keeping this thing in mind the main subject of Tantra kaumudi is 'Saral Laghu Prayog' i.e. easy small process and sorcery flick i.e. Tone Totkas also keep base. Similarly one day, two day or three day sadhnas have their own significance and cannot estimate lightly.

This time whichever easy sadhnas mentioned, either we got it from Sadgurudev ji else from his ascetic disciples or from any other siddh persons. But all are very authentic, therefore they can be done in prescribed manner and success can be achieved, only if we believe our self, on sadhna and on revered Sadgurudev Ji..

Along with that we have noticed tremendous influence of planets and constellation on human life. From these planets and constellation whole world is moving and under complete influence also. But what if when human had to suffer their malefic? Even if planet seems to be nonliving clod, but the ejecting rays do affect human because every particle of this whole world is unified with each other.

Therefore this can't be neglected and second reason is for smooth movement of whole world and in moving they play significant role…but what when we are continuously facing its malefic…

Then only solution left behind is the Path of Sadhna which accurately can gives us results and makes our life obstacle free. This also helps us in living a stress less life. Sadhna removes all scarcities and lackings of life effectively. It gives complete sense to our life. You can do whatever sadhna which you feel like doing it and progress towards high ambition of life. Generally whenever life fills with obstacle or condition becomes critical then to get rid from all these problems, person knocks every door in best possible way. But the problem is, normally he underestimates the effects and results of doing sadhna. Due to this reason he loses his efforts and finance also. Therefore we have given the Navgrah sadhnas – sadhnas related to nine planets. We tried to make it best. But when it comes to sadhnas especially small duration sadhna then it should not be taken it for one or two day process rather it must be persuade until you don't get complete success. Sometimes it may happen that at first stroke you may not achieve success but might be a second try gives you success.. So one should not lose hope until success is not achieved, because the efforts made in right direction and appropriate guidance will definitely lead you towards success.

इन लघु प्रयोगों के बारे मे ...

Some Specific point about these small sadhana ?

इससे सबंधित कुछ अनूठे तथ्य...

जिवभवेतजीवनम, मनुष्य अपने पूरे जीवन काल में सर्वोत्तम उपलब्धि की तलाश हमेशा करता रहता है. अपने विचार मनोभाव तथा अपनी आकांशा और अपेक्षाओ की धरातल पर उसका जीवन सदैव गंतव्य की प्राप्ति की और गतिशील रहता है चाहे वह भौतिक जीवन हो चाहे वह आध्यात्मिक जीवन हो. हमारे ऋषियों ने भी यही कहा है, सर्वे भवन्तु सुखिना.. सब मनुष्य सुखो की प्राप्ति करे. सुख तथा उसकी अनुभूति वस्तुतः हर एक मनुष्य के लिए अलग अलग होती है इस प्रकार किसी मनुष्य के लिए सुख का अर्थ क्या होगा उसका आंकलन सिर्फ वही व्यक्ति कर सकता है एक व्यक्ति जो की इतना धनवान है की वह अपने भोजन में पचास प्रकार के व्यंजनों पर रोज व्यय कर सकता है लेकिन अगर उसे मधुमेह है तो फिर उस धन का अर्थ नहीं है, वह व्यक्ति दुखी है, वहाँ पर सुख नहीं है.

वहाँ पर सुख की अनुभूति नहीं है वहीँ दूसरी और कोई व्यक्ति है जो पूर्ण स्वस्थ है लेकिन धनहीन है यहाँ तक की आज का इन्तजाम हो जाये तो तृप्ति का भाव होता है लेकिन ये चिंता भी होती है की कल का क्या होगा कल किस प्रकार से अपना और अपने परिवार का जीवन चलेगा. वहाँ पर भी अपूर्णता है, सुख का भाव नहीं है.

वस्तुतः सुखो के पूर्ण उपभोग के लिए दो तथ्य आवश्यक है एक तो हमारे पास सुखप्राप्ति का स्त्रोत हो तथा उतना ही आवश्यक है की हमारे अंदर उतनी सामर्थ्य हो की हम सुखो का उपभोग कर सके अगर इन दोनों भाग में से कोई एक भी तथ्य से व्यक्ति वंचित रह जाता है तब उसे सुख का पूर्ण अनुभव संभव नहीं हैयह बात है भौतिक जीवन की. यहाँ हम वापस से एक बार फिर से उसी विषय की और चलते है जहां से शुरुआत हुई है की सर्वोच्च उपलब्धि क्या है दरअसल देखा जाए तो मनुष्य का स्वयं का अस्तित्व ही उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है. क्यों की मनुष्य के अस्तित्व से है उसकी दुनिया, उसका जीवन और उसके सभी पक्ष है लेकिन अगर वह अस्तित्व ही ना हो तो? तब न ही स्वयं होगा ना ही स्वयं से जुड़े हुवे कोई पक्ष इसी लिए कहा गया है की जीव से ही जीवन है. क्यों की अगर जीव ही नहीं है तो फिर जीवन कैसा . जीवन की प्राप्ति करना अपने आप में जीव की बहुत ही बड़ी उपलब्धि है. मनुष्य तो वह देहधारण के बाद बनता है. और फिर गतिशील होता है जीवन. भोग तथा मोक्ष दोनों पक्षों में पूर्णता प्राप्ति के लिए मनुष्य का किसी न किसी रूप में सदैव आतंरिक तथा बाध्य संघर्ष और यही गतिशीलता उसको चैतन्यता प्रदान करती है तथा जीव से आगे वह मनुष्य, मनुष्य से आगे वह पुरुष, और पुरुष से आगे पुरुषोत्तम बनने की क्रिया को सम्प्पन करता है.

और यह सब तभी संभव है जब जीवन हो. सुखो की प्राप्ति मनुष्य जीवन का एक आवश्यक अंग है ही, लेकिन जैसे की ऊपर कहा गया है, सुख की अनुभूति सर्व व्यक्ति के लिए अलग अलग है लेकिन उन सुखो की प्राप्ति के सबंध में...हमारे ऋषिमुनियों ने कभी सुखो को घृणा की द्रष्टि से नहीं देखा है उन्होंने हमेशा सुखो की प्राप्ति तथा सुख से आगे बढ़ कर आनंद की प्राप्ति मनुष्य कर सके उसके लिए ज्ञान को प्रदान किया है, क्रियाओ के रूप में, साधनाओ के रूप में. नितिपूर्वक किया गया भोग ही सुख है तथा उसे प्राप्त करने में किसी भी प्रकार का कोई दोष नहीं है, वरन यह तो मनुष्य जीवन की सार्थकता भी है की वह अपने जीवन को संवारे, पूर्ण सुख भोग तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति करे अपना तथा अपने कुल का, देश का तथा गुरु का नाम रोशन करे. जहाँ एक और हम आध्यात्मिक पूर्णता की और गतिशील हो, वहीँ दूसरी और हम भौतिक द्रष्टि से भी पूर्ण और सक्षम बने तथा जीवन के चारो पुरुषार्थो को उत्तमता से जिए, धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष. और उसके लिए जो सब से प्रथम और मुख्य आवश्यकता है वह तो प्राप्त हो ही गई है, वह है जीवन. अब इसको संवरना है. लेकिन यह होगा कैसे. यह होगा हमारे ऋषियो के प्रदान किये हुवे ज्ञानसे . हमारी संस्कृति में निहित वह गुढ़ ज्ञान से जिसके माध्यम से हमारे पूर्वजो ने हमारे ऋषियो ने पूर्णता की प्राप्ति कीथी. जहां एक और वह आध्यात्मिक द्रष्टि से परिपूर्ण थे वहीँ दूसरी और वे अपने जीवन में भौतिक पक्ष में भी पूर्ण सम्प्पन थे ही. यह सब संभव हुआ जब उन्होंने विशेष प्रक्रियाओ के माध्यम से दैवीय सहायता की प्राप्ति की.

उन देवी तथा देवताओं से तंत्र के माध्यम से शक्ति की प्राप्ति की और इसी लिए तंत्र के बारे में कहा गया है की तंत्र जीवन भी है लेकिन तंत्र उससे भी ज्यादा, जीवन का श्रृंगार है लेकिन हमारी उपेक्षा में यह ज्ञान लुप्त होता गया. धीरे धीरे व्यक्ति इससे दूर होते चले गए और यह विद्या का नाम मात्र कुछ स्वार्थपरस्तो के हाथो का खेल हो गया जिनको तंत्र का कुछ ज्ञान नहीं था और मात्र स्वार्थ सिद्धि के लिए अपने हिन् कार्यों के लिए उन्होंने उसे तंत्र का नाम दे दिया. तथा ऐसी महान विद्या को, हमारी सनातन संस्कृति के एक महत्वपूर्ण अंग को हीन द्रष्टि से देखा जाने लगा, उसे छल का नाम दिया जाने लगा. निश्चित रूप से यह अंधकार की स्थिति थी, लेकिन दूसरी तरफ गुप्त रूप से तंत्र से सबंधित प्रामाणिक ज्ञान गुरु शिष्य प्रणाली के माध्यम से गतिशील रहा. और वही प्रणाली में कई महापुरुषों के द्वारा समय समय पर समाज को इस विद्या से परिचित कराने तथा जोड़ने का अनिवार्य कार्य किया गया. एसी प्रणाली में ही राष्ट्र को कई महापुरुषों की प्राप्ति हुई, चाहे वह आदि शंकराचार्यजी हो, स्वामी विशुद्धानंद हो, रामकृष्ण परमहंस हो, वमखेपा हो. सभी ने समाज के उत्थान के लिए तंत्र साधना का मार्ग जनमानस को समय समय पर दिखाया है.

श्री सदगुरुदेव ने तंत्र के क्षेत्र में तथा इस पुरातन विद्या को समाज में जोड़ने में अपने पूरे जीवन का योगदान दिया है, समाज के हर वर्ग में उन्होंने तंत्र साधनाओ को पहोचने तथा उनके परिणाम प्राप्त करने का व्यावहारिक ज्ञान सब को समान्तर रूप से प्रदान किया ही. वस्तुतः सभी व्यक्तियो के लिए यह संभव नहीं होता है की वह सीधे ही उच्चकोटि के अनुष्ठानिक कर्मो को अपना कर अपने जीवन को बदल दे. इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुवे उन्होंने सरल तथा सहज प्रयोगों को जन मानस के मध्य प्रदान किया, जिसको कोई भी व्यक्ति अपना कर अल्प काल में ही सहज रूप से प्रयोग को सम्प्पन कर के अपने अभीष्ट की प्राप्ति कर सकता है. ऐसे दुर्लभ तथा गुप्त प्रयोग निश्चित रूप से अपनी तीव्रता के माध्यम से अल्प काल में ही साधक की मनोकामना पूर्ण करने का सामर्थ्य रखते है. ऐसे प्रयोग गुप्त रूप से गुरु शिष्य प्रणाली से चलते होते है तथा ऐसे प्रयोग को कड़ी परीक्षा के बाद ही दिया जाता था. ऐसे ही गुरु शिष्य प्रणाली में विभिन्न मतों के अलग अलग सिद्धो से तथा सदगुरुदेव से प्राप्त दुर्लभ लघु प्रयोग यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे है. यह लघु प्रयोग अब तक गुप्त रहे है तथा प्रकाश में नहीं आये है. इन लघु प्रयोगों के माध्यम से प्रक्रियाओ को अपना कर साधकगण अल्प समय में पूर्ण लाभों को प्राप्त कर अपने जीवन को संवार सके यही आशा है

==

Jeevbhavetjeevanam, Human beings always searches for highest accomplishment throughout his whole life. He always moves forward towards his destination based on his thoughts, mental feelings, desires and expectations. It may be materialistic life or spiritual life. Our sages and saints have also said the same thing Sarve Bhaventu Sukhina…….every human being should attain happiness. In reality, happiness and its experience are different for each human being.

Therefore, what will be the meaning of happiness for any person; only that person can estimate it. If person is so wealthy that he can daily spend on 50 types of dishes in his diet but if he is suffering from diabetes then for him Money is useless. He is sad, neither happiness nor pleasant feeling exist in this case. On the other hand there is another person who is completely healthy but is deprived of wealth. If he is able to make his both ends meet he may feel satisfied but there is always an anxiety that what will happen tomorrow. How will he be able to meet expenditure of himself and his family? This is also incompleteness, feeling of happiness is absent.

Actually, two things are needed for completely enjoying the happiness. Firstly we should possess source of attainment of pleasure. Secondly and equally important that we should have the capability to enjoy the pleasures. If a person is deprived of any of these two things, then he can't experience happiness in totality. This was regarding Materialistic life. Let's move back again to that subject from where we begin that what is highest accomplishment. In fact, person's own existence is his highest accomplishment .Because his world, his life and all its aspects are there due to existence of person himself but if that existence is not there then? Then neither will he be there himself nor any aspects related to him. Therefore it has been said that life exists due to creature only. Because if the creature is not there, then where is life? Attaining life is very high accomplishment of creature in itself. Only after attaining the body, one becomes human being and from there, the life starts. To attain completeness in both Bhog and Moksha aspects, human beings have to always struggle both internally and externally in one form or the other. And this dynamism provides consciousness to him and he becomes Human being from creature, Purush from human being and purushotam from purush. And all this progression is possible only when there is life.

Attainment of happiness is an essential element of human life, but as it has been told above that feeling of happiness varies from person to person. But relating to these pleasures…..our sages has never seen pleasures from disgust point of view. They have provided the knowledge in the form of sadhnas and procedures so that human being can attain pleasures and even move ahead and attain bliss. Bhog done ethically is pleasure and there is no fault in attaining it. Rather it is meaningfulness of human life that he beautifies his life; attain complete pleasure, Bhog and prosperity. He makes his Kula, nation and Guru proud. On one hand we should move towards spiritual completeness and on the other hand we should become complete and capable from materialistic point of view and attain all major purpose of life Dharma, Artha, Kaam and Moksha. And for all these, the first and foremost need has been satisfied i.e. life. Now it has to be beautified but how will it happen? This will happen through the knowledge provided by our saints, through the hidden knowledge implicit in our culture by means of which our ancestors, our sages attained completeness. On the one hand they were complete spiritually while on the other they were complete in materialistic aspect too.

This was possible when they attained assistance from God and Goddess through special procedures. Through the medium of Tantra, they attained Shakti from those God and Goddesses and therefore it is said about Tantra that Tantra is life but more than that it is the beauty of life. But due to our ignorance, this knowledge became obsolete. Slowly and gradually, person started moving away from it and this Vidya was degraded by some selfish people who did not possess any knowledge about Tantra and they give their mean work name of Tantra for meeting their own selfish ends.

And such great Vidya, one important part of our Sanatan culture was seen from inferiority point of view, was seen as fraud. Definitely, it was state of darkness, but on the other hand in hidden form, authentic knowledge relating to Tantra survived through Guru-Shishya system. And in this same system, some great persons from time to time did all necessary work to introduce society to this Vidya and associate them to it.It may be Aadi Shankracharya, Swami Vishudhanand, Ramakrishna Paramhans, Vaama Khepa all of them have time to time shown the path of Tantra sadhna to common people in society .

Shree Sadgurudev spent all his life in the field of Tantra and to connect this ancient Vidya with society. He equally provided the practical knowledge to every category of society to recognize Tantra sadhnas and get results out of it.In reality, it is not possible for every person to directly do higher-order anushthan and transform their lives. Keeping this fact in mind, he put forward easy and Saral prayogs among common people which any person can follow it with ease and attain the desired results in shorter period of time. Such rare and hidden prayog have the definite potential to fulfill the wishes of sadhak in shorter duration owing to their intensity. Such prayog goes on through Guru Shishya system and these are given only after strong examination. Such rare Laghu prayogs obtained from various Siddhs of various sects of Guru Shishya system and from Sadgurudev are being given here.These Laghu Prayog have remained hidden up till now and have not come into light. We hope that sadhak will follow these Laghu prayogs, attain complete benefits and beautify their lives in short duration.

साबर धन प्राप्ति प्रयोग

sabar dhan prapti prayog

आर्थिक उन्नति हेतु एक अनूठी साधना

यह तीव्र साबर मन्त्र प्रयोग है तथा इसे सम्पन्न करने के बाद साधक को धन सबंधित कोई समस्या सताती नहीं है.यह प्रयोग साधक को किसी भी शुक्रवार से शुरू करना चाहिए.

साधक को रात्री में १० बजे के बाद स्नान कर लाल वस्त्र को धारण करना चाहिए. साधक को लाल आसन पर उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ मुख कर बैठना चाहिए, साधक अपने सामने किसी बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर देवी लक्ष्मी का कोई चित्र स्थापित कर दे. इसके पास ही साधक एक हकीक पत्थर भी रख दे. साधक तेल का दीपक लगाए तथा गुग्गल का धुप जलाए.साधक इसके बाद रुद्राक्ष की माला से निम्न मंत्र की २१ माला जप करे.

ॐ गुरुजी को आदेश लक्ष्मी आवे, सात समुद्र से आवे, कहियो करे सुख समृद्धि दे जो ना आवे तो महादेव की आण मेरी भक्ति गुरु की शक्ति वाचा सिद्ध नाथ गुरु की आदेश आदेश आदेश

(OM GURUJI AADESH LAKSHMI AAVE, SAAT SAMUDRA SE AAVE, KAHIYO KARE SUKH SAMRUDDHI DE JO NAA AAVE TO MAHAADEV KI AAN MERI BHAKTI GURU KI SHAKTI VAACHAA SIDDH NAATH GURU KI AADESH AADESH AADESH)

यह प्रयोग साधक तीन दिन तक करे. तीन दिन बाद साधक को हकीक पत्थर को अपनी तिजोरी या धन रखने के स्थान में लाल वस्त्र पर स्थापित कर दे. साधक चाहे तो हकीक पत्थर को चांदी की डब्बी में रख कर उस डब्बी को भी तिजोरी या धन रखने के स्थान में रख सकता है. साधक को साल में यह प्रयोग एक बार उसी हकीक पत्थर पर करना चाहिए. साधक को धन की चिंता से मुक्ति मिलती है साधक को माला प्रवाहित नहीं करनी है तथा हर साल इसी माला से साधक प्रयोग सम्पन्न कर सकता है. देवी के चित्र को साधक पूजा स्थान में स्थापित कर दे.

==

Dhan Prapti Prayog (Prayog to attain wealth)

It is intense sabar mantra prayog and after doing it, sadhak does not suffer from any money-related problems.This prayog can be started by sadhak from any Friday.

After 10 P.M in the night, sadhak should take bath and wear red dress. Sadhak should sit on red sitting mat and face North or east direction.Sadhak should spread red cloth on any wooden mat in front of him and establish any picture of Goddess Lakshmi. Near it, sadhak should place one Hakik stone. Sadhak should light oil lamp and use Guggal Dhoop.

Sadhak should then chant 21 rounds of below mantra by Rudraksh rosary.

Mantra :

OM GURUJI AADESH LAKSHMI AAVE, SAAT SAMUDRA SE AAVE, KAHIYO KARE SUKH SAMRUDDHI DE JO NAA AAVE TO MAHAADEV KI AAN MERI BHAKTI GURU KI SHAKTI VAACHAA SIDDH NAATH GURU KI AADESH AADESH AADESH

Sadhak should do this prayog for 3 days. After three days, sadhak should establish Hakik stone on red clothes in safe or the place where you keep the money. Sadhak, if he wants, can keep this Hakik stone in silver case and place that case in safe or the place where money is kept. Sadhak should o this prayog once on that Hakik stone. Sadhak gets rid of money-related anxiety. Sadhak should not immerse the rosary and every year he can use the same rosary for the prayog. Sadhak should establish picture of goddess in worship-room.

Soundary prapti Sadhana jagat

अपने व्यक्तित्व को सौंदर्य तत्व युक्त करने हेतु अद्भुत साधना

यह प्रयोग सौंदर्य प्राप्ति के लिए है. इसको समपन्न करने के बाद साधक को मुहासे आदि से मुक्ति मिलती है तथा वर्ण में अनुरूप सुधार आता है. साधक का तेज निखरता है तथा साधक को शारीरिक सौंदर्य की प्राप्ति होती है.

साधक यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार से शुरू करे. रात्रि काल में साधक १० बजे के बाद यह प्रयोग कर सकता है.इस साधना में साधक के वस्त्र आसन पीले रंग के रहे. साधक का मुख पूर्व दिशा की तरफ हो. साधक सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करे तथा किसी पात्र में कुमकुम से स्वास्तिक बनाए. उस स्वास्तिक पर साधक दीपक को स्थापित करे. दीपक शुद्ध घी का हो.

इसके बाद साधक स्फटिक माला से निम्न मंत्र की ३१ माला मंत्र जाप करे.

ॐ ऐं अनंगाय रतिप्रियाय पूर्ण सिद्धिम देहि देहि फट

(OM AENG ANANGAAY RATIPRIYAAY POORN SIDDHIM DEHI DEHI PHAT)

साधक यह क्रम ३ दिन तक करे. साधक को रोज स्वास्तिक बनाने की ज़रूरत नहीं है. उसी स्वास्तिक पर दीपक को रोज स्थापित करे. तीन दिन तक यह क्रम हो जाए उसके बाद साधक स्वास्तिक वाले पात्र को धो सकता है तथा साधक माला को धारण कर ले. माला को ७ दिन धारण करके रखना है. ८ वे दिन माला को नदी तालाब या समुद्र में विसर्जित कर दे.

===

Saundarya Prapti Prayog (prayog to obtain beauty)

This process is to attend beauty. After completing the process one may get rid of troubles like pimples and other and complexion becomes better. Glow of the sadhaka increases and sadhaka receives physical beauty.Sadhak can start this process from any Friday. Sadhak can do this process after 10PM in the night.

In this prayog, cloths and sitting mat of the sadhaka should be yellow colored. Sadhak should sit facing east direction. Sadhak should light joss sticks and in some vessel prepare Swastika symbol with red vermillion. On that Swastika, sadhak should establish lamp. Lamp should be of pure clarified butter (Ghee).

After this, sadhak should do 31 rounds of the following mantra with crystal rosary.

OM AENG ANANGAAY RATIPRIYAAY POORN SIDDHIM DEHI DEHI PHAT

Sadhaka should do this process for three days. Sadhak need not to prepare Swastika daily. On the same Swastika, lamp could be established daily. When three days of the process is completed then sadhaka can wash the vessel in which Swastika is made and rosary should be worn. Rosary should be worn for seven days. On the eight day, rosary should be immersed in river, pond or sea.

Shtru vaadha nivaaran prayog

अपने जीवन को शत्रुओ से मुक्त रखने हेतु गोपनीय साधना

साधक यह प्रयोग किसी भी शनिवार को या कृष्ण पक्ष की अष्टमी को करे.रात्री काल में ११ बजे के बाद साधक काले वस्त्र धारण कर काले आसन पर बैठ जाए. साधक का मुख दक्षिण दिशा की तरफ हो.

साधक को अपने सामने एक सुपारी रखनी चाहिए, सुपारी को तेल मिश्रित सिन्दूर से पोत दे तथा उसको भैरव का प्रतीक मान कर उसका पूजन करे. साधक चाहे तो इसके स्थान पर कोई भैरव विग्रह या काल भैरव यन्त्र भी स्थापित कर सकता है. पूजन के बाद साधक शत्रु निवारण के लिए भैरव देव से प्रार्थना करे. साधक को तेल का चार मुख वाला दीपक प्रज्वलित करना है, तेल कोई भी रहे. जब तक साधना चले तब तक दीपक बुझे नहीं इस बात का ध्यान रखना चाहिए. साधक को दीपक में तेल कम पड़ने पर तेल दीपक मे भरते रहना चाहिए. साथ ही साथ साधक को गुग्गल का धुप भी लगाना चाहिए

इसके बाद साधक रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की ५१ माला उसी रात्रि में सम्पन्न कर ले. साधक २१ माला के बाद कुछ देर आसन पर ही विश्राम ले सकता है.

ॐ भ्रं भ्रं भ्रं अमुकं उच्चाटय उच्चाटय शत्रुबाधां नाशय नाशय भ्रं भ्रं भ्रं फट्

(OM BHRAM BHRAM BHRAM AMUKAM UCCHATAY UCCHATAY SHATRUBAADHAAM NAASHAY NAASHAY BHRAM BHRAM BHRAM PHAT)

साधक को मंत्र में अमुकं की जगह शत्रु का नाम लेना चाहिए साधक के पास अगर शत्रु की कोई तस्वीर हो तो उसे भी अपने सामने रख लेना चाहिए तथा काजल या सिन्दूर से उस तस्वीर पर उस शत्रु का नाम लिख देना चाहिए५१ माला हो जाने पर सुपारी/यन्त्र/विग्रह को पूजा स्थान में स्थापित कर दे, माला को श्मशान में या किसी निर्जन स्थान पर फेंक दे. यह कार्य दूसरे दिन ही हो जाना चाहिए. इससे साधक को सुरक्षा चक्र प्राप्त होता है तथा शत्रु का उच्चाटन हो जाता है साधक को शत्रुपीड़ा से मुक्ति मिलती है साथ ही साथ वह शत्रु साधक को भविष्य में कभी कष्ट नहींपहुचाता हैं.

==

Shatru Baadhaa Nivaran Prayog (prayog to get rid over enemy)

Sadhak should do this process on any of the Saturday or on the eight night of the dark moon.In the night after 11PM, one should wear black cloths and sit on the black sitting mat. Sadhaka should sit facing south direction.

Sadhak should place one betel nut in front. vermillion and oil should be applied on that betel nut and poojan of that betel nut should be done understanding it as form of God Bhairav. If sadhak wishes sadhak can even establish Bhairava Idol or Kaal Bhairav Yantra instead of the betel nut. After poojan, sadhak should pray to lord bhairava to remove enemy trouble. Sadhaka should light four face lamp of oil (chaturmukhi). Oil could be any. Sadhak should take special note that till the time sadhana is going on, that lamp should remain lighted and should not be off in between. Sadhak can pour oil whenever it is needed in the lamp. With that, sadhak should also light Guggal Dhoop.

After this, sadhak should complete 51 rounds of the following mantra with rudraksha rosary. 51 rosaries should be completed on the same night. Sadhaka can take rest for some time after 21 rosaries.

OM BHRAM BHRAM BHRAM AMUKAM UCCHATAY UCCHATAY SHATRUBAADHAAM NAASHAY NAASHAY BHRAM BHRAM BHRAM PHAT

In mantra, on the place word Amukam sadhak should chant name of the enemy. If sadhaka haves any photo of the enemy that should also be placed in front and name of the enemy should be written on the photo with Soot or vermillion. When 51 rosaries are completed then betel nut/ yantra/ idol should be placed in worship place, rosary should be thrown in cremation ground or should be placed in some uninhabited place. This task has to be completed on second day. With this, sadhaka receives protection and get rid on the troubles of the enemy. With that, enemy does not create any trouble in the future.

वशीकरण प्रयोग

Vashikaran prayog

एक आश्चर्य जनक अद्भुत गोपनीय साधना

यह प्रयोग साधक किसी भी रविवार की रात्रि को कर सकता है.साधक रात्रि में ११ बजे के बाद यह प्रयोग करे. रात्री में स्नान आदि से निवृत हो साधक लाल वस्त्रों को धारण करे. इसके बाद साधक लाल आसान पर बैठ जाए. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए. इसके बाद साधक अपने सामने बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर विशुद्ध पारदकाली का प्राण प्रतिष्ठित विग्रह स्थापित करे तथा उसका पूजन करे.

पूजन के बाद साधक निम्न मंत्र की२१ माला रुद्राक्ष माला या मूंगा माला से जप करे.

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं अमुकं वश्यं कुरु कुरु सिद्ध कालिके क्रीं क्रींक्रीं नमः

(OM KREENG KREENG KREENG AMUKAM VASHYAM KURU KURU SIDDH KAALIKE KREENG KREENG KREENG NAMAH)

साधक को अमुकं की जगह पर जिस पर वशीकरण करना हो उस व्यक्ति का नाम लेना चाहिए. यह क्रम साधक को ३ दिन करना चाहिए. ३ दिन के बाद साधक को माला किसी देवी मंदिर में दक्षिणा के साथ अर्पित कर देना चाहिए साध्य व्यक्ति का शीघ्र वशीकरण हो जाता है तथा साधक के अनुकूल हो जाता है

===

Vashikaran Prayog

This process should be done in the night time of any Sunday.Sadhak should do this process after 11PM. After taking bath in the night, sadhak should wear red cloths. After that, sadhak should sit on the red sitting mat. Sadhak should sit facing north direction.

After that, sadhak should spread red cloth on the wooden mat placed in front and on that sadhak should establish idol of the Visuddh Paarad Kaali and should do the poojan.After poojan, sadhak should chant 21 round of the following mantra with rudraksha rosary or Moonga rosary.

OM KREENG KREENG KREENG AMUKAM VASHYAM KURU KURU SIDDH KAALIKE KREENG KREENG KREENG NAMAH

On the place of the Amukam in mantra, Sadhak should chant name of the person on which Vashikaran prayog is to be done.This process should be done for three days. After 3 days, sadhak should place rosary in any goddess temple with some money. Vashikaran of the desired person is done sudden and becomes favorable to sadhaka.

Grih sukh shantI prayog

एक साधना गृहस्थ सुख शांति हेतु

यह प्रयोग गृहस्थ सुख शांति प्रयोग है जिसके माध्यम से घर में क्लेश का वातावरण समाप्त होता है तथा परिवारजनों से मदभेद दूर होते है घर में शांति स्थापित होती है तथा गृह में सुख की प्राप्ति होती हैयह प्रयोग साधक किसी भी शुक्लपक्ष की चतुर्थी को प्रारंभ करे. साधक को यह प्रयोग रात्रिमें करना चाहिए. साधक १० बजे के बाद स्नान आदि से निवृत हो कर पीले वस्त्रों को धारण करे. साधक पीले आसान पर उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ मुख कर बैठ जाए साधक अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर या किसी पात्र में पारद गणपति या श्वेतार्क गणपति की स्थापना करे. अगर साधक के लिए यह संभव न हो तो साधक कोई भी चैतन्य गणपति विग्रह या यंत्र को स्थापित करे तथा पूजन करेइसके बाद साधक निम्न मंत्र का जाप २१ माला करे. साधक यह जप स्फटिक या रुद्राक्ष माला से करे.

ॐ गं श्रीं गणाधिपतये ऋद्धि सिद्धिं श्रीं गं नमः

(OM GAM SHREEM GANAADHIPATAYE RIDDHI SIDDHIM SHREEM GAM NAMAH)

साधक को यह क्रम ३ दिन तक करना है. साधक को घर के वातावरण में शीघ्र ही अनुकूलता प्राप्त होती है. साधक को माला का विसर्जन नहीं करना है. भविष्य में यह प्रयोग दुबारा करने के लिए साधक इस माला का प्रयोग कर सकता है

==

Gruh Sukh Shanti Prayog

This process is for material peace and happiness with which disputed atmosphere in the house ends and conflicts between family members are solved. Peace becomes established in the house and happiness is gathered in the house.This process could be started on the fourth day of the light moon days. Sadhak should do this process in the night. After 10 PM in the night, after taking bath sadhak should wear yellow cloths. Sadhak should sit on yellow sitting mat facing north or east direction.

On the wooden mat or any vessel sadhak should established Paarad Ganapati or Swetark Ganapati. If it is not possible for Sadhaka then sadhak should establish any activate idol of the Ganapti and should established and poojan should be done.

After that, 21 rosary of the following mantra should be chanted. This chanting should be done with crystal rosary or rudraksh rosary.

OM GAM SHREEM GANAADHIPATAYE RIDDHI SIDDHIM SHREEM GAM NAMAH

Sadhak should do this process for 3 days. Very soon sadhak will receive comfort in the house atmosphere. Sadhak should not immerse rosary. In future this rosary could be use to repeat this process.

भवन सिद्धि तथा वाहन सिद्धि प्रयोग

Bhavan siddhi tatha vaahan siddhi prayog

सफल जीवन के लिए एक आवश्यक प्रयोग

अगर साधक को योग्य भवन की प्राप्ति नहीं हो रही हो, या फिर मकान या वाहन की प्राप्ति में कोई बाधा आ रही हो तो इसके समाधान हेतु यह प्रयोग है.साधक यह प्रयोग शुक्रवार की रात्रि को ९ बजे के बाद शुरू करे. इस साधना में साधक को सफ़ेद वस्त्र धारण करने चाहिए. इसके बाद साधक अपने सामने किसी पात्र में कुमकुम से ' ' लिखे. इसके ऊपर साधक गोमती चक्र या कोई भी शंख रख दे. तथा साधक उसका सामान्य पूजन करे. साधक घी का दीपक प्रज्वल्लित करे तथा सुगन्धित अगरबत्ती लगाये. साधक को लाल रंग के पुष्प भी अर्पित करने चाहिए,

इसके बाद कमलगट्टा माला से या स्फटिक माला से साधक निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जाप करे.

ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं भवन सुख सिद्धिं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः

(OM SHREEM SHREEM HREEM BHAVAN SUKH SIDDHIM HREEM SHREEM SHREEM NAMAH)

साधक को यह क्रम ३ दिन तक करना चाहिए. ३ दिन तक गोमती चक्र या शंख वहीँ पर स्थापित रहे तथा उसे तीसरे दिन मंत्र जाप के बाद धुप दे कर अपने पूजा स्थल में स्थापित कर दे साधक माला को किसी देवी मंदिर में दक्षिणा के साथ अर्पित कर दे. जिस पात्र में ' ' लिखा हुआ है उसे भी धो लेना चाहिए, साधक को शीघ्र ही अनुकूलता प्राप्त होती है.

===

Bhavan Siddhi tatha vaahan Siddhi Prayog

If sadhak is not getting proper house or there is trouble to get house or vehicles then this prayog provide solution.Sadhak should do this process in the night after 9 PM of the Friday. Sadhak should wear white cloths in this sadhana. After that sadhak should write ' ' with red vermillion in some vessel. On that one should establish Gomati Chakra or any conch (Shankh) and sadhaka should do normal poojan of it. Sadhak should light lamp of the Ghee and joss sticks. Sadhak should also offer red flowers.

After that with KamalGatta rosary or Crystal rosary sadhak should chant 51 rounds of the following mantra.

OM SHREEM SHREEM HREEM BHAVAN SUKH SIDDHIM HREEM SHREEM SHREEM NAMAH

Sadhak should do this process for three days. For three days Gomati chakra or conch (shankh) should remain established and on the third day when mantra chanting is completed, gomatichakra/conch should be offered Dhoop and established in the worship place. Rosary should be placed in goddess temple with some money. Vessel should be washed in which ' ' is written. Sadhak soon receives comfort.

विद्या प्राप्ति हेतु प्रयोग

Vidya prapti hetu sadhana

आज के समय के लिए एक अद्भुत साधना

यह प्रयोग विद्या प्राप्ति का प्रयोग है. इसके माध्यम से व्यक्ति की एकाग्रता का विकास होता है. तथा अभ्यास में रूचि बढ़ने लगती है. याददाश्त शक्ति का विकास भी इस प्रयोग के माध्यम से होता है. अतः यह प्रयोग अभ्यास करने वाले छात्रों के साथ साथ हर एक व्यक्ति के लिए दिन प्रतिदिन के जीवन के लिए उपयोगी है.

यह प्रयोग किसी भी सोमवार से शुरू किया जा सकता है.साधक यह प्रयोग सुबह सूर्योदय के समय या रात्री काल में सूर्यास्त के बाद कभी भी कर सकता है. साधक स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्रों को धारण करे. इसके बाद साधक उत्तर की तरफ मुख कर सफ़ेद आसन पर बैठ जाए.साधक किसी पात्र में केसर से 'ऐं' लिखे तथा उसमे पहले से ही तैयार की हुई खीर ड़ाल दे. उस पात्र को अपने सामने रखे तथा इसके बाद साधक निम्न मंत्र की ५१ माला जाप करे. यह जाप स्फटिक माला से या रुद्राक्ष माला से किया जा सकता है.

ॐ ऐं श्रीं पूर्णत्वं श्रींऐं ॐ

(OM AENG SHREEM POORNATVAM SHREEM AENG OM)

प्रयोग की समाप्ति पर साधक खीर पात्र को वहीँ बैठ कर खीर खा ले इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है तथा साधक शीघ्र ही अनुकूलता का अनुभव कर पाएंगे माला का विसर्जन नहीं करना है, साधक इस माला को यही प्रयोग वापस करने में तथा किसी भी सरस्वती साधना में उपयोग कर सकता है.

===

Vidya prapti prayog

This process is for to attend knowledge. With this process, concentration of the person increases. And interest in the study also increases. Memoru power also increases with this process. Thus, this process is important for students and other people in their daily life.

This process could be started from any Monday.Sadhak can do this process after sunrise in the morning or in the evening after sun set. After bath sadhak shoul wear white cloths. One should sit on the white sitting mat facing north direction.In some vessel, sadhak should write'ऐं' with saffron and already prepared Kheer (sweet) should be added in that vessel and after that sadhak should chant 51 rounds of the following mantra. this mantra chanting should be done with crystal or rudraksha rosary.

OM AENG SHREEM POORNATVAM SHREEM AENG OM

After process is over one should eat Kheer sitting there only. Thus process is completed and sadhak starts feeling comfort in very soon. Rosary should not be immersed, this rosary could be use to repeat this process or could also be used in any Saraswati sadhana.

Some important facts about ayurved and chikitsa rasayan

आयुर्वेद के कुछ गोपनीय रहस्यों से परिचित कराता हुआ एक लेख

'आरोग्यम धन सम्पदा'

आरोग्य कों भी एक प्रकार से धन सम्पदा ही कहा गया है.. अच्छा आरोग्य या निरोगी काया आज के युग में वरदान समान है. परन्तु आज की स्थिति में ऐसा बहुत ही कम देखने कों मिलता है. प्रत्येक व्यक्ति किसी ना किसी रोग से पीड़ित है. प्राकृतिक रूप से आरोग्य बनाये रखना उत्तम माना गया है. हमारी देह पञ्च तत्वों से निर्मित है और पञ्च तत्व प्रकृति से. इसीलिए जब ये हाड मांस की देह दोष युक्त होती है तो सभी दोष निवारण फिर वो असाध्य ही क्यों ना हो, इस प्रकृति से ही प्राप्त होते है. जो प्रकृति से निर्मित है तो उसका निदान प्रदान प्रकृति में ही छुपा हुआ है. बस आवश्यकता है उसके सही पहचान की..

प्राचीन काल में ऋषि मुनियों ने रोग के निवारण के लिए जंगलो में जाकर पेड़ पौधों, फूलो का आश्रय लिया, उस पर गहन चिंतन, मनन, असंख्य प्रयोग और अभ्यास के बाद उन दुर्लभ सूत्रों की खोज की जिन्हें आज हम 'आयुर्वेद' के रूप में जानते है. यह विज्ञान दीर्घ काल तक प्रचलित रहा परन्तु जैसे जैसे अभ्यास का क्षेत्र विस्तृत होता गया, नए नए विज्ञान नयी नयी शाखाओ की उत्पत्ति होती गई.

परन्तु आयुर्वेद का आजभी अपना अलग ही एक स्थान है और जो इसका अनुभव ले चुके है इसकी महत्ता कों मानते भी है. आयुर्वेद में वनस्पति जड़ी बूटियों से रोगों का निवारण किया जाता है.आयुर्वेद के आठ अंगों में से एक महत्वपूर्ण अंग हैं **रसायन**. रसायन आयुर्वेदशास्त्र के सबसे महत्वपूर्ण विशिष्टता में गिनाजाता हैं . कहा गया है...

शास्तानां रसादीनां लाभोपायः| ....**चरक चिकित्सास्थान**

विशुद्ध, संपन्न रसादि धातु का लाभ प्राप्त होना अर्थात ही रसायन. आरोग्य के रक्षण हेतु वैसे ही रोगमुक्ति के लिए जितना महत्वपूर्ण शरीर गत दोषों का संतुलित होना होता है उतना ही महत्वपूर्ण है धातु संपन्न होना भी. असंतुलित दोष रोग के कारण होते है, पर रोग उत्पन्न होते है धातु के आश्रय तले. मूलतः अगर धातु सारवान और सशक्त होंगी तो सहजता से रोग उत्पन्न होते ही नहीं और अगर हो भी जाए तो ज्यादा समय तक शरीर में टिकते नहीं इसीलिए आयुर्वेद में रसायन के बारे बताया गया हैं की ...

जराव्याधिनाशाकमौषधम् रसायन|

स्वस्थस्य ओजस्करं यत्तु तद वृष्यं तद रसायनम्| ....**चरक विमनस्थान**

कायाकल्प, बुढापा जैसी अपरिहार्य प्राकृतिक घटनाओं और व्याधियो का नाश करने वाली औषधि अर्थात रसायन. निरोगी व्यक्ति कों न केवल मन अपितु तन कों भी तुष्टि पुष्टि और उत्साह वर्धन करने वाला रसायन ही है.

रसायन के लाभ आयुर्वेद में कुछ इस प्रकार से बताए गए.

१. रसायन सेवन करने से दीर्घायु, स्मृति, मेधा, आरोग्य, तारुण्य, प्रभा, उत्तम वर्ण, स्वर, मानसिक औदार्य, उत्तम शरीरबल, श्रेष्ठ इन्द्रिय शक्ति और सभी प्रकार के गुणों का लाभ प्राप्त होता है.

२. रसायन के सेवन से वाणी सिद्धि और सतेज कांति प्राप्त होती है.

३. रसायन सेवन रोग प्रतिकारक शक्ति बढाता है. रोगों का जड़ सहित नाश करने में और उसकी पुनरावृत्ति कों रोकने के लिए भी रसायन का सेवन उत्तम माना गया है.

४. शरीर का स्टेमिना बढाने में रसायन का ही उपयोग होता है.

५. मानसिक रचनात्मकता का नवीन प्रवाह रसायन के नियमित सेवन से होता है.

६. आज की दिनचर्या या जीवन शैली कुछ इस् प्रकार की है की ना चाहते हुए भी हम मानसिक चिंताओ से ग्रस्त रहते हैं, स्ट्रेस कम होने का नाम नहीं लेता और हम समय से पहले ही वृद्ध दिखाई देने लगे है ऐसे समय रसायन कायाकल्प का कार्य संपादित कर हमें नवयौवनमय बनाये रखता है.

रसायन के जो प्रकार बताये गए हे उनमे से **'कुटीप्रावेशिक रसायन'** व **'वातातपिक रसायन'**पर बात करते है. मोटे मोटे तौर पर जाने तो **कुटीप्रावेशिक रसायन** वो रसायन हैं जो कुटी में रहकर किया जाता है. अर्थात मनुष्य जब इस् प्रकार का रसायन सेवन करता हैं तो वो सामान्य आहार विहार नहीं ले सकता. इसका प्रमुख कारण हैं की उस दरम्यान उसे कठोरता से नियमों का पालन करना होता है. तभी गुण आता है.

वही **वातातपिक रसायन** जिसमे प्रकृति अर्थात हवा, धुप इनके सेवन के साथ जो सेवन किया जाए, मतलब पथ्य पालन किये बिना आप जिस रसायन का सेवन करते है उसे वातातपिक रसायन कहा गया है इस पद्धति कों किसी भी रूप से अपना सकते है कोई खास नियम नहीं अपनाने पड़ते आप चल फिर घूम फिर सकते हैं .

इन दोनों प्रकार में कुटीप्रावेशिक रसायन कों श्रेष्ठ पद्धति माना है. परन्तु ये उतनी ही क्लिष्ट भी है. सो सभी इसका पालन कर पूर्ण कर पाए ये जरुरी नहीं.. इसीलिए वातातपिक रसायन सर्वसामान्य मनुष्य आसानी से कर सकता है.

रसायन लाभ प्राप्त करने के लिए दो बाते ध्यान रखना अति आवश्यक है पहला, रसायन शास्त्रोक पद्धति, उत्तम वीर्यवान द्रव्यों से बना हुआ हो, दूसरा रसायन सेवन के पूर्व शरीरशुद्धि प्रक्रिया अति आवश्यक है. और शरीर शुद्धि के महत्व कों बताते हुए आयुर्वेद में कहा गया है ...

नाविशुद्धशरीरस्य युक्तो रासायनो विधिः |

न भाति वाससि रंगयोग इवाहितः || **...सुश्रुत रसायन स्थान**

इसे इस तरह समझे की जिस तरह मैले कपड़ो में रंग चढ़ता नहीं उसी प्रकार शरीर शुद्धि के बिना रसायन ग्रहण का लाभ नहीं होता. अर्थात ही शरीर शुद्धि केवल पेट साफ़ करने की क्रिया तक सीमित नहीं है बल्कि स्नेहन स्वेदन कर शात्रोक्त पद्धति से विरेचन विधि भी कर लेना चाहिए, अगर शरीर शुद्धि योग्य रीति से संपन्न हो जाए तो पथ्यपालन करने पर उसका निश्चित तौर पर लाभ होता ही है.. और जब इन औषधियों का सेवन या इसकों बनाते समय अगर मंत्रो कों सम्पुटित कर दिया जाए तो ये अचूक फल देती है. शरीर व मनस दोष ना दूर करते हुए अर्थात पंचकर्म ना करते हुए अगर जो व्यक्ति रसायन सेवन करता है उसे रसायन लाभ कदापि नहीं होता..

आयुर्वेद में स्पष्ट कहा है की मन जिनके अधीन है उन्हेंरसायन सेवन का प्रस्ताव कदापि नहीं देना चाहिए. वैसे ही जो आलसी, श्रद्धाहीन व कष्ट ना करते हुए फल की अपेक्षा करते है और मुख्यतः जो लोग रसायन औषधिसम्बन्धी विशवास और आदर भाव नहीं रखते ऐसे व्यक्तियों कों रसायन सेवन मार्ग नहीं देना चाहिए क्योंकी ये उन पर फलित ही नहीं होंगी. और अगर होती भी हैं तो बहुत ही कम मात्र में..

आज त्वरित उपायों के पीछे दौड़ते हुए एलोपेथी अपनाने पर जहा हम इसका लाभ तुरंत प्राप्त करते है वही इसके दीर्घ काल में दुष्परिणाम भी भोगते है. आयुर्वेद प्राचीन पद्धति है. सर्वप्रथम हमारे ऋषि मुनियों ने ही इस् विद्या का गहन अभ्यास कर ये अनमोल धरोहर हमारे लिए रख छोड़ी है.

परन्तु ये बात भी उतनी ही सत्य है की जिन्हें इस् विद्या परविश्वास नहीं उन पर इन औषधियों का कहे वैसा असर नहीं होता..

अब उन तथ्यों कों जान लेना भी आवश्यक हैं जिस वजह से रसायन औषधियां गुणकारी वलाभकारी साबित होती है. और इन्हें बनाने के पीछे कितनी कड़ी महनत होती है..

- रसायन औषधियों की निर्मिति में केवल वैसी ही औषधियों का उपयोग होता है जो पूर्ण रस और वीर्य युक्त हो जो योग्य काल में तयार हुई हो,(समय, स्थान, शुद्धिकरण, मौसम, साफ़ सफाई का विशेष ख्याल और औषधि कों बनाते समय बनाने वाले की मानसिकता का भी बहुत असर होता है. अर्थात मानस चिंतन का अपना एक अलग महत्व है). जिन का पोषण पर सूर्य किरणों से, उचित मात्र में छाया देने से और पानी से हुआ हो.

- औषधियों जो पक्षी, कीड़े आदि ने खायी हुई हो या सडी हुई हो या खराब हो गई हो या कोई रोग ग्रस्त हो वैसी औषधियों नहीं ली जाती. इसी सन्दर्भ में एक आयुर्वेदक निरिक्षण के बाद ही औषधियों कों रसायन शाला में लाया जाता है संस्कार क्रम पूर्ण किया जाता है

- रसायन गुणधर्म युक्तऐसी कई औषधिया जैसे आवला, हिरडा, सतवारी, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, पुनर्नवा, गिलोय, गोक्षुर, अश्वगंधा, नागरमोथा, हल्दी, बच, नागकेशर, वेलची, दालचीनी, मूंदकपर्णी, चन्दन, कुडा, अर्जुन, अडूसा, ग्वारपाठा, मुलेठी, कंदमूल आदि वनस्पतियाँ स्वभावतः रसायन गुण युक्त होती है परन्तु इनके भी प्रकार होते है जो एक अच्छा निरीक्षक बारीकी से देखके ही उपयोग में लाता है. कई औषधियों दिखने में एक जैसी हो सकती है इसीलिए बहुत ध्यान पूर्वक इस् कार्य कों संपन्न किया जाता है

- औषधियों का संकलन कर उन्हें विशिष्ट पद्धति से उपयोग में लाया जाता है. सभी घटक द्रव्य केवल एक साथ मिला देने से रसायन तैयार हो गया ऐसा नहीं. इन्हें योग्य क्रम से, योग्य संस्कार करते हुए क्रमानुसार रसायनतैयार किया जाए तो ही इनका खरा गुण बाहर आता है और तब ये ग्रहण करने पर सटीक प्रभाव देती हे

- जब इन औषधियों कों पेड़ पौधों से विभक्त किया जाता है तो एक विशेष क्रिया के बाद ही इनका रस शाला में आगमन होता है. सर्व प्रथम इनका आव्हान कर प्रार्थना की जाती है. वही जब इनकों साधना काल में उपयोग किया जाता है तब भी इसी प्रकार का क्रम संपन्न किया जाता है. जिसमे पहले उस वनस्पति के पास जाके उसका विधिवत पूजन, मंत्रो से आवाहन कर फिर उनकी आज्ञा प्राप्त कर उन्हें अगले दिन विभक्त किया जाता है और लाने पर आदर सहित शेष क्रिया संपन्न की जाती है. तभी वे संस्कारित होकर फल प्रदान करते है.

इन औषधियों का जहां आतंरिक संतुलन में उपयोग होता है वही इनका साधनाओ में भी अत्यधिक गोपनीय ढंग से प्रयोग करने पर सिद्धि प्राप्ति में सहायता होती है. विशेषतः इस विषय पर सदगुरुदेव लिखित कुछ ग्रन्थ अमृत समान है. जिनमे उन्होंने बहुत ही बारीकी से ना जाने कितनी वनापतियो का विविध प्रयोग बताया है. जो घरेलु तौर पर करने से लाभदायक होती ही है **सदगुरुदेव जीने** आयुर्वेद पर पुरानी पत्रिका हो या प्रवचन या किताबो में एक से एक गुह्य और दुर्लभ सूत्र दिएहुये हैं उनका तो कोई जवाब नहीं.

सदगुरुदेव जी लिखित **'निखिलेश्वरानंद चिंतन'** में एक पूर्ण खंड चिकित्सा ज्ञान जो रत्न औषधि पर लिखा है.जिसमे उन्होंने बताया है की किस प्रकार रत्नों, ज्योतिष, ग्रह और आयुर्वेद के संयोग के माध्यम से असाध्य रोग कों भी ठीक किया जा सकता है और जो राम बाण उपाय साबित हुई है ऐसी बीमारियों में जैसे हार्ट अटेक, कर्क रोग, डायबिटीस इत्यादि में असरदार रही अगर निर्देशानुसार तैयार की गई हो तो.

अब साधना पक्ष पर बात करे तो आयुर्वेद का साधना जगत में अति उच्च स्थान है. साधना काल में आने वाली शारीरिक अडचनों कों आयुर्वेद के माध्यम से हटाया जा सकता है भूक, प्यास, लघु तथा दीर्घशंकाया कामोत्तेजना के कारण साधना में वाधा उत्पन्न होना सामान्य बात है. इनके निवारण हेतु ऐसी कई वनस्पति जड़ी बूटियाँ है जिनके सेवन से भूख प्यास कों स्तंभित कर निवृत्ति क्रम से मुक्त होकर साधना बिना किसी बाधा से संपन्न की जा सकती है

अब अंत में अगर अधिष्ठात्री देवियों के बारे में नहीं लिखा जाए तो ये लेख अधूरा सा साबित होगा, क्योंकि किसी भी विद्या में उसकी आराध्या की कृपा बिना सफलता तो मिल ही नहीं सकती इसीलिए चिकित्सा रसायन में ऐसी अनेक देवी देवता, यक्षिणियाँ हैं जिनकी कृपा द्रष्टि से इस् विधा में पूर्ण सफलता, सिद्धि और ज्ञान अर्जन किया जा सकता है. तो ऐसे ही एक महाविद्याओ में माँ भुवनेश्वरी जो इनकी अधिष्ठात्री देवी है उनकी साधना से इस विद्या में गहन दुर्लभ सूत्र और ज्ञान अर्जन किया जा सकता है. इस् सन्दर्भ में अनेक साधनाए ब्लॉग पर दी जा चुकी है. आगे अगर समय मिलता है तो मै जरुर कोशिश करुँगी की इस विधा की जो अन्य मुख्य देवी देवता है उनके बारे में विश्लेषण प्रस्तुत कर सकूँ .

जिस प्रकार प्रत्येक विधा कों संपूर्ण रूप से जानने के लिए कई देवताए होते है वैसे ही उस विधा की मुख्य अधिष्ठात्रियोंकी अगर अराधना की जाए तो आश्चर्यचकित कर देने वाली उपलब्धियों का आस्वादन कर लाभ लिया जा सकता है.

===

Some facts to be known about Ayurveda and MedicatedRasayan

"AarogyaDhanSampada"

Health is also known as one of treasure. A good health or a healthy body is like boon in today's era. But in current situation it seems rare. Everyone is suffering from any disease. And in such situation maintaining health by natural way is the best solution. Our body is made up of five elements and these five elements are incurred from nature. Therefore when this fleshy body get defected then to reduce such defects whether it is severe solution can get from nature itself. Well which is generated from nature then solution is also hidden in nature itself. What you need is to recognise it in right way..

Since in ancient time our sages went in forest and did a deep study of trees, plants and flowers. And after doing contemplation, many experiments and continuous practice they prepared such rare and secret facts which are known as "Ayurveda" in current date. This science remained famous since ancient time but by the time the area of study got broader and wider many different branches got discovered. But today also Ayurveda has same place with same dignity. And those who have self-experienced can evident the importance of Ayurveda. From the eight parts of Ayurveda the 'Rasayan'… And this is count as the most significant distinctive in Ayurveda. It has been said…

Shastaanaamrasaadeenaam laabhopaayah

....Charak Chikitsasthaan

Getting benefit from pure, complete Ras metal is known as Rasayan.

For protection of health and complete cure, it is important remove body faults similarly it is important to have a body with minerals also. Misbalancing of defects is the main reason of disease. But disease gets generated when there is deficiency in minerals. If minerals are substantive and potential, it hardly possible diseases may not arrive. If it would happened then body will not retained. And that's why Rasayan is so important part of Ayurveda.

Jaravyaadhinaashaakamaushadham rasayan

Swasthsy aojaskaramyattu tad vrushyam tad rasayanam

…..charakVimaansthaan

The destroyer of natural happenings like rejuvenation, aging and illness is called as Rasayan. The healthy person should not be healthy just by body but also by heart and brain and the one which enhances satiation, embonpoint and enthusiasm is known as Rasayan.

Ayurveda has mentioned following benefits about Rasayan –

1. The intake of Rasayan gives you long life, sharp memory, youth; health, blaze, radiance, fair complexion, good voice, mental liberalism, best sensual power, physical strength and actually every type of qualities can be achieved.
2. The intake of Rasayan gives you the Voice accomplishment i.e. Vaani Siddhi and spirited radiance.
3. Rasayan increases antibodies, it vanish disease from root and along with this it stops reiteration process also.
4. It increases stamina also.

5. It increases mental creativity and fills mind with new energy and new thoughts.
6. Today's life style or daily routine is something like that were we never like to be in mental worries n all but still we are bogged up with such thoughts. Stress doesn't get reduce at any cost and we are getting older due to it before time.

Let's have some rough idea about the types of Rasayan which are been told under texts, from that '**KutipraveshikRasayan**' and '**VaataatpikRasayan'**. Generally the **Kutipraaveshikrasayan** is that were you undergoing such treatment wherein you have to be obeying all the rules and regulations. You cannot follow your daily routine as you used to. The main reason behind it is you have to go through a strict diet chart then only it is benefitted.Whereas the **Vaataatpikrasayan** is treatment were along with dieat chart you can have nature assistance like having sunlight, natural air. Hardly have you had to follow such strict routine. There are less strict rules. While living normal life you can go through this treatment. Among both this treatment it has been recommended to have the first one but this is the most tedious because of extreme strict dietary chart. And everybody can follow it is hardly possible. That's why the second one is termed to be more suitable.

For rasayan benefits two basic rules must be undertaken i.e. firstly, rasayan should be made up of classical method, best slime minerals. Secondly, before intaking whole body must be get purified. It has been mentioned in Ayurveda that for better results purification process is most important while having such type of treatment.

Naavishuddhshareerasya yukto rasaayano vidhi

Na bhaati vaasasi rangyogi vaahitah

……SushrutRasayansthan

This can be understood in such way that if the process of colour making applied on dirty clothes then it is not possible that the exact colour may come out as a result. That means the purification process of body is not just limited up to the purification of stomach rather it should be done with the proper lubrication and diaphoresis by classical method along with purgation process also. If body is purified by a prescribed process then the effect of following of dietary chart is very influential. When such medicines are taken and in making of such medicines if you chant mantra regarding it then it becomes more effective and bestows best results. In taking of rasayan without removing the mental, physical defects and Panchkarm process can never be benefited. It has been clearly mentioned in Ayurveda who is slave of mind, should not take rasayan, similarly one who is careless, faithless and desires a fruit without doing hard work should never take rasayan. Basically those who don't believe or don't respect these rasayan medicines should seriously avoid. The reason behind it is it may not effect on such persons and if it would then that may be in very less percentage.Today we run after quick action medicine of allopathic. This may results faster but in same quantity it is harmful for long run. Ayurveda is very ancient science. This was discovered by our ancient sages; they put their hardship and left such valuable heritage for us, for our betterment.But this is also as truth the people who don't believe on it will never having fruits of it.

Now it is necessary to know such facts from which this rasayan became that useful and authentic. And how much hard work is hidden in its creation process.

- In formation of rasayan medicines only such medicines are considered which have pure juice, contain spermatozoa, which is made in proper time span (time, place, purification, cleanliness and the mind-set while making this medicine is very important factors)

which are nurture under sunlight, right amount of water and shadow.

- The medicines which are tasted or eaten by birds, insects or which is tainted, or which is ill such medicines are strictly avoided. In this context a keen observer and knower of Ayurveda herbs is allotted to make a proper judgement and take out only such herbs and shrubs which are in healthy state. And ony such are brought to the laboratory for further process.

- Many medicines which naturally have the property of rasayan like Avla, Hirda, satvaari, Bramhi, shankhpushpi, punarnava, giloy, gokshur, nagarmotha, turmeric, bach, naagkeshar, cardamom, dalchini, mundakparni, sandal, kuda, arjun, adusa, gvaarpatha, mulethi, kandmooletc which are considered in such medicines. But they also have types. So only a perfectionist can figure out the difference. As many look similar in appearance. So it is done carefully.

- After gathering this are processed in very special way. Mixing of all components liquids at one time doesn't lead to the exact formula of medicine rather good amount of patience is required while preparation. When it done in proper sequence then only the exact formula is prepared and it give exact effect.

- When these herbs are detached from trees or their roots then a special process of worship is done. First the calling of that herb is done then at that place the worship and holder god goddess is called with complete respect. Same process is done in sadhna field also then they become fruitful. Their permission is asked and then saskar process is done.

Where these medicines are used for internal balancing on other hand they are used in sadhna field also.

If they are used in very special and secretive way then they are most helpful in earning the siddhi in particular sadhna. Especially on this subject **Sadgurudevji** had written many texts which are nectar. It hardly possible to calculate but he had given numerous description regarding infinite herb which can be easily prepare in homely environment. He had written many facts in old magazines, books or in his speeches had given such secret facts which are impossible to get from any other source.

Sadgurudevji written one of book i.e. **"Nikhileshvaranand Chintan"** in this book he had introduced altogether a different technique of correcting severe to severe disease by the help of precious stones, astrology, planets and Ayurveda, the combination of all resulted in such great formula of destroying many irrecoverable diseases like heart attack, diabetes, cancer etc.

Now if we talk about the Sadhna field then Ayurveda is placed on very high standards. It has its own importance. There are many problems which occurred in sadhna span like hunger, thirst, natural calls and most importantly sexual excitement. Such problems can be removed with the help of herb and rasayan intake. By taking such herbs you can get rid of for some particular time and till that span you can accomplish your sadhnas without hesitation.

Now,at last but not least without talking about the holder or owner god/ goddess this topic may remain incomplete. Because every science/ study has their own holder gods/goddess, so without praising them or without their kindness it is difficult to get complete success in that particular subject. Therefore in Medication Rasayan there are many devis, devtas their associates like yaksh and yakshinis which helps us to achieve success and their worshipping gives us complete knowledge regarding that field.

So from such deities one of the main deities the **MahavidyaMaaBhuvaneshvari** is the most renowned and recognised famous goddess of this field who's praising and sadhna bows you the complete knowledge and siddhi. In this context many sadhnas are given in blog. If I may found opportunity in future then I would really try to provide more details on other related deities. There are many deities of one particular field but every field having some specific gods/goddess which sadhnas and worshipping gives you miraculous knowledge in that field.

कार्य सिद्धि हेतु राहु ग्रह साधना

Kaary siddhi hetu rahu grah sadhana

जीवन के लिए आवश्यक एक साधना

उच्च कोटि के साधक जानते हैं कि किसी भी साधना करने से पूर्व यदि नवग्रह को अनुकूल कर लिया जाए तो सफलता कहीं जल्दी से प्राप्त हो सकती हैं अतः अन्य बातों के अतिरिक्त नव ग्रह पूजन विधान और अन्य अन्य आवश्यक बातें उच्च कोटि के व्यक्तित्व बहुत जयादा ध्यान मे रखते हैं क्योंकि एक छोटी सी भूल सारे साधनात्मक प्रक्रिया, सारी मेहनत पर पानी फेर सकती हैं,हर साधना मे नव ग्रह का अपना ही एक महत्व हैं, इन्हें कभी भी कम करके नही देखा जाना चाहिए और साधना मे तो हर उस चीज का ध्यान रखना ही चहिये जो कि एक साधक को सफलता के और अधिक नजदीक ले जा सकती है.

भारतीय मानस निश्चय ही नव ग्रहों को बहुत अधिक महत्व देता हैं, जब भी कोई शुभ कार्य करना होता हैं तब नव ग्रह पूजन एक आवश्यक अंग माना जाता हैं फिर वह शुभ कार्य चाहे विवाह हो या कोई अन्य

नव ग्रह मे राहु ग्रह का यूँ तो कोई आकाशीय स्थान नही हैं पर इसकी सत्ता से इसके प्रभाव से कोई भी इनकार नही कर सकता हैं.

जीवन मे जो भी अकस्मात घटनाये होती हैं उनके पीछे राहु ग्रह का प्रभाव माना जाता हैं और जीवन मे उस आकस्मात घटनाये शुभ भी हो या अशुभ हो सभी के पीछे इसी ग्रह का भी प्रभाव होता हैं शुभता के लिए तो हर कोई तैयार होगा पर अशुभता तो मानो जीवन के आधार को ही हिला दे .और इन सब मे सबसे ज्यादा दुखदायी हैं दुर्घटना का होना .

आपके सामने यह प्रयोग जो दिखने मे तो छोटा पर हैं बहुत तीव्र परिणाम देने मे समर्थ तो क्यों नही इस छोटे से साधनात्मक प्रयोग को कर अपने जीवन से दुर्घटना को दूर किया जाए,और साधना हैं भी इसी का नाम की जीवन जैसा हम चाहे वैसा चले न कि हम कठपुतली की तरह भाग्य के हाथों मे असहाय सा रहें.. ...इसलिए दुर्घटना से बचने के लिए, कार्य सिद्धि के लिए राहू साधना की जाती है.

यह साधना साधक कृष्ण पक्ष के प्रथम दिन से प्राम्भ कर सकता हैं . साधना प्रारंभ करने का समय रात्रि काल में 9 बजे के बाद का रहे. दिशा उत्तर रहे. साधक स्नान करके सफ़ेद वस्त्र धारण करें तथा आसन सफ़ेद रंग का हो .

सदगुरुदेव पूजन ,भगवान गणेश पूजन और फिर इस साधना के लिए सीधे हाथ मे जल ले कर संकल्प ले फिर एक माला कम से गुरू मंत्र का जप जरुर करें.यह आवश्यक हैं क्योंकि साधना मे सफलता पाने के लिए सदगुरुदेव जी का वरद हस्त होना परम आवश्यक तथ्य हैं .

अपने सामने साधक, किसी बाजोट पर सफ़ेद वस्त्र बिछा कर, उस पर राहू यन्त्र या राहू का चित्र स्थापित करे तथा उसका सामान्य पूजन धूप, दीप, अगरबत्ती करे.

उसके बाद साधक सर्व प्रथम सिंह पर विराजमान राहू ध्यान कर ध्यान मंत्र का११ बार उच्चारण करे.

करालवदनः खडगचर्मशूलीवरप्रदः नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते

(karaalavadanah khadagacharmashooleevarapradah neelasimhasanasthascha raahuratra prashasyate)

इसके बाद साधक को निम्न मन्त्र की 11 माला मंत्र जप करना चाहिए, यह मंत्र जप काले हकीक माला से या रुद्राक्ष माला से किया जाना चाहिए .

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः रां राहवे सर्व व्याधि नाशय कार्य सिद्धिं कुरु कुरु नमः

(OM BHRAAM BHREEEM BHRAUM RAAM RAAHAVE SARV VYAADHI NAASHAY KARY SIDDHIM KURU KURU NAMAH)

इसके बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन,कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप और जप समर्पण जरुर करे .

साधक को यह क्रम ११ दिनों तक करना चाहिए. ११ दिन के बाद जप माला को किसी भी नदी या तालाब मे प्रवाहित कर दे. साधक की सभी प्रकार से कार्य सिद्धि होती है. इस तरह से यह सरल प्रयोग आपके जीवन मे और भी अनुकूलता प्रदान करने मे समर्थ हैं .आप सभी साधक भाई बहिनों को इन सरल पर प्रभावशाली प्रयोगों को अपने जीवन मे स्थान जरुर देना चाहिए

==

Rahu sadhana

Sadhaka of the higher level knew that before doing any sadhana if nine planets are made favourable in that condition, success could be gained more quickly; thus, sadhaka who achieved higher level also focuses more on the Nav-Grah Poojan process and other specific processes related to that because small mistake even can ruin the hard work put in the sadhana.In every sadhana, nine planets have their own importance. Points related to planets should not be taken light and in sadhana one should always take care of all the points which can lead sadhaka to success.

Indian point of view always gave big importance to nine planets, whenever any auspicious process is supposed to be done at that time poojan of nine planets are taken as important aspect rather that auspicious moment may be marriage or may be anything. In nine planets, Rahu is not planetary placed in the sky but its power and impact could not be neglected.In the life time, whatever accident occurs, it is believed that there is impact of the planet Rahu behind it and rather incident may be favourable or unfavourable there remains impact of the Rahu behind it.

Everyone would like to receive auspiciousness but unfavourable conditions destroys base of the life. And in all these situations, accidents are among most pain full situations.

Presented process seems very small but capable of giving desired results quickly so why not perform this process and remove trouble of sudden accidentsAnd sadhana is name of the process which leads us to the life where everything desired could be gained and not to be remained unfortunate.With this reason, to be saved from accidents and for the accomplishments of the tasks, Rahu sadhana is done.

This process could be started from the first day of the Dark moon night (krishn Paksa). Time to start sadhana should be after 9'o clock in the night. Direction should be north. After having bath sadhak should wear white cloths and should sit on the white sitting mat.Sadhak should first do Guru Poojan followed by Ganapati Poojan and than one should take water in the palm and take Sankalp for the sadhana. After that sadhak should at least do one rosary mantra chanting of Guru Mantra. This is important as for the success in the sadhana, blessings of the guru is necessary.

Sadhaka should place wooden mat in front and should spread white cloth on it. Sadhaka should establish Rahu Yantra or picture of the Rahu on it and should do poojan with incent sticks. After this, sadhaka should chant meditation mantra eleven times while meditating Rahu seated on the lion.

karaalavadanah khadagacharmashooleevarapradah neelasimhasanasthascha raahuratra prashasyate

(करालवदनः खडगचर्मशूलीवरप्रदः नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते)

After that sadhaka should chant 11 rounds of the following mantra. This mantra chanting should be done with black hakeek rosary or rudraksha rosary.

OM BHRAAM BHREEEM BHRAUM RAAM RAAHAVE SARV VYAADHI NAASHAY KARY SIDDHIM KURU KURU NAMAH

(ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः रां राहवे सर्व व्याधि नाशय कार्य सिद्धिं कुरु कुरु नम)

After this, once again sadgurudev poojan and one rosary of the guru mantra & Jap samarpan process should be done.

Sadhak should do this process for 11 days. After 11 days sadhak should immerse rosary in lake or river. Sadhak receives benefits in every task.

This way this simple process can provide complete comfort. Everyone should accomplish these small but powerful procedures in the life.

RoudRa ketu sadhana

समस्त प्रतिकूलता की समाप्ति तथा चर्मरोगों की निवृति के लिए केतु की साधना

सदगुरुदेव जी ने अपनी अति उच्चस्तरीय कृति "कुंडली दर्पण" मे यह स्पष्ट किया हैं कि जीवन मे जो भी अकस्मात घटना होती हैं उसके लिए केबल दो ग्रह कहीं ज्यादा उत्तरदायी हैं प्रथम तो राहु और दूसरा केतु

केतु ग्रह को सामान्य ज्योतिष साधारणतः बहुत अधिक महत्त्व नही देते हैं .पर यह भी अन्य ग्रहों की भांति अनेको गुप्त रहस्य अपने आप मे समाहित किये हुये हैंऔर आज जो भी किताबे बाजार मे उपलब्ध हैं.

उनमे भी कुछ विशेष इस ग्रह के बारे मे जानने मे नही मिलता हैं ठीक राहु की भांति इस ग्रह का भी कोईआकाशीय स्थान नही हैं .पर इसकी महत्वता अपने आप मे हैं ही.

जब बात साधना क्षेत्र की हो तो हमें कोई ग्रह नही बल्कि सभी ग्रहों का अपना ही एक महत्व हैं इस बात को हृदय मे उतार लेना ही चाहिए ,यूँ तो किसी भी ग्रह को अपने अनुकूल बनाने के कई कई उपाय दिए होते हैं पर साधनात्मक रूप से किसी ग्रह का किसी विशेष वाधा या प्रतिकूलता हटा कर उसे अनुकूल बनाना या फिर किसी विशेष इच्छा हेतु उसका साधनात्मक विधान प्राप्त होना, सच मे अपने आप मे एक भाग्य का खेल ही कहना चाहिए, यूँ तो मानसिक चिंताए का पता लगाने के लिए कुंडली मे केतु की कई स्थिति से यदि अध्ययनकरने पर परिणाम बहुत उत्साहवर्धक पाए गए हैं.

हमने तंत्र कौमुदी के इस अंक मे कुछ ऐसी साधना आपके सामने रखी हैं या रखने का प्रयत्न कर रहे हैं जो साधनात्मक रूप से सभी के अनुकूल हो, जिसमे आपको किसी ज्योतिष के चक्क्कर काटने नही पड़ेंगे कि हमारा यह यह ग्रह कमजोर हैं बल्कि यदि आप इस साधना के लाभ लेना चाहते हैं तो आप बिना किसी हिचक के कोई भी प्रयोग कर सकते हैं फिर भले ही वह ग्रह आपकी कुंडली मे कैसा भी हो क्योंकि साधनात्मक रूप से जब जप कार्य कियाजाता हैं, तब सबंधित ग्रह की अनुकूलता प्राप्त होती हैं और जिस संकल्प के लिए जप किया जा रहा हैं उसमे पूरी अनुकूलता प्राप्त होती हैं.

आज जिस तरह से आकर्षक बनने के लिए ,रासायनिक पदार्थों से निर्मित जो भी क्रीम या पेस्ट आ रहे हैं वह तात्कालिक परिवर्तन भले ही कुछ दिखा दें पर दीर्घ काल मे उनके परिणाम बहुत ही हानिकारक होते हैं.और जिस तरह से हर चीज जो आज बाजार मे प्राप्त हो रही हैं वह लगभग सभी की सभी किसी न किसी तरह से मिलावट युक्त हैं या रासायनिक पदार्थो के प्रयोग से बनी या फिर हमारे जन्म से ही कुछ चर्म रोग किसी कारण वश हो गए हो तो इस हेतु इस साधना को जिसे "रौद्र केतु साधना" भी कहा गया हैं उसे करके लाभ प्राप्त करना ही चाहिye.

इसलिए समस्त प्रतिकूलता की समाप्ति तथा चर्मरोगों की निवृति के लिए केतु कीसाधना की जाती है.

यह साधना शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन से करनी चाहिए, इस साधना को प्रारंभ करने का समय रात्रि काल में 9 बजे के बाद का रहे.साधक सर्व प्रथान स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्रों को धारण करे तथा सफ़ेद आसन पर उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठ जाए,

सदगुरुदेव पूजन,भगवान गणेश पूजन और फिर इस साधना के लिए सीधे हाथ मे जल ले कर संकल्प ले फिर एक माला कम से गुरू मंत्र का जप जरुर करें.यह आवश्यक हैं क्योंकि साधना मे सफलता पाने के लिए सदगुरुदेव जी का वरद हस्त होना परम आवश्यक तथ्य हैं .

साधक अपने सामने केतु का यन्त्र या चित्र को बाजोट पर सफ़ेद वस्त्र बिछा कर उस पर स्थापित करे. तथा उसका पूजन करे.

उसके बाद साधक सफ़ेद हकीक माला से या रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र का 51 माला जप करे.

ॐ स्रौं कें रोद्रकेतवे कें स्रौं फट्

(OM SRAUM KEM RODRAKETAVE KEM STRAUM PHAT)

इसके बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन, कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप और जप समर्पण जरुर करे.

यह क्रम साधक को ३ दिन करना है. ३ दिन के बाद साधक माला को विसर्जित कर दे.

इस तरह यह प्रयोग सम्पन्न होता हैं यह निश्चित हैं कि साधक को इस साधना से चर्म रोग आदि मे लाभ मिलता हैं पर यह कहीं उचित होगा कि इस प्रयोग को बार बार करना ही चाहिए .और यह नही हो तो हर दिन कम से कम दैनिक पूजन मे तो कुछ मंत्र जप जरुर करना चाहिए.

==

Raudr Ketu Sadhana

"Kundali Darpan" one of the sadgurudev's amazing work, it is well defined that whatever sudden incidents or accidents happens in the life of the person, two planets are more responsible for this, one is Rahu and second is Ketu.Generally Ketu is not given much importance in the normal astrology but this planet also filled with many secret mysteries in itself like other planets and today, majority of the books which are available in the markets does not provide particular or special knowledge regarding this planet. Like Rahu, this planet also does not own aerial position but that does not make its important lesser.

When subject is about sadhana, one should establish this thought in mind that not one but every planet owns their own importance. There may be many processes to make specific planet favorable but from the sadhana point of view it could be fortune to have specific process related to specific planet to remove some specific trouble or perversity.

Apart, to understand troubles related to mental worries, many encouraging results have found by various positions of Ketu in the Kundali.

In this issue of the Tantra Kaumudi, we have tried to place some sadhanas in front of you which is suitable for everyone in the term of sadhana procedures in which one needs not to go to astrologer with complain that this or that planet is weak but if you want to have benefits, one may do the procedures without any hesitation though that planet may be whatever positioned in your Kundali but when chanting is done in form of sadhana then favorable conditions related to that planet and related purposes is gained .

Today, to look more attractive, creams and pastes made of various chemicals could grant desired results very quickly, but at long time duration, results turns to the dangerous effects on the skin. In today's time, the way, we find products of the market which are adulterate or chemical mixed or if there is some skin diseases by birth then one should go for this sadhana which is called as "Raudr Ketu sadhana" and one should take benefits of it.

Thus, for to end perversity and skin diseases ketu sadhana is done.

This sadhana should be done from the first day of the light moon (shukl paksa). Sadhana should be started after 9'o clock in the night.

Sadhak should first have bath and wearing white cloths sadhaka should sit on the white sitting mat facing north direction.

Sadhak should first do Guru Poojan followed by Ganapati Poojan and than one should take water in the palm and take Sankalp for the sadhana. After that sadhak should at least do one rosary mantra chanting of Guru Mantra. This is important as for the success in the sadhana, blessings of the guru is necessary.

Sadhaka should establish and do poojan of Ketu Yantra or picture of the planet Ketu infront on the white cloth placed on the wooden mat.

After that with white Hakeek rosary or rudraksha rosary one should chant 51 rounds of the following mantra

OM SRAUM KEM RODRAKETAVE KEM STRAUM PHAT

(ॐ स्रौं कें रोद्रकेतवे कें स्रौं फट्)

After that sadhaka should again do poojan of sadgurudev, atleast one rosary of the gurumantra and Japa Samarpan process.

This process should be done for three days. After 3 days rosary should be immersed.

This way, this process is completed, it is for sure that sadhak receives comfort in troubles of the skin diseases but that would be better if sadhaka keeps on repeating this process. And if that is not possible, sadhak atleast chant this mantra few times in daily process of the poojan.

Vyaapaar aur buddhi me unnati hetu -budh sadhana

जीवन के लिए अति आवश्यक अद्भुत गोपनीय साधना

जीवन मे बुद्धि या प्रज्ञा या शिक्षा का महत्व कम नही समझा जा सकता हैं ,और एक व्यक्ति किस स्तर तक उन्नति कर सकता हैं इसके लिए उसकी प्रज्ञा या बुद्धि कितनी विकसित हैं या हो सकती हैं इन बातों का निर्धारण करने के लिए एक ज्योतिष कुंडली मे अन्य बातों के साथ बुध ग्रह का विशेष रूप से अध्ययन करता हैं.

एक तरफ जहाँ यह ग्रह बुद्धि का प्रतीक हैं वहीँ दूसरी ओर ये व्यापार मेकितना सफल एक व्यक्ति हो सकता हैं, इन बातों के निर्धारण मे इसी ग्रह की प्रमुख भूमिका होती हैं,वेसे भी आज का आधुनिक युग मे बुद्धि की खासकर त्वरित बुद्धि और उच्च शिक्षा होने के लाभ से कोई भी इनकार नही कर सकता हैं.

पर यह प्रकृति का वरदान तो हर किसी को प्राप्त होने के बाद भी, प्राप्त नही होता हैं और इसके लिए ज्योतिष एक व्यक्ति को तरह तरह के समयानुकूल सलाह देते हैं ही.पर हर उपाय के कुछ धनात्मक यदि तथ्य हैं तो कुछ ऋणात्मक तथ्य भी हैं, इन प्रतिकूल तथ्यों को ज्योतिष छुपा लेते हैं.

पर साधना क्षेत्र मे ऐसा नही हैं हम सभी महाकवि कालिदास की कहानी से भली भाँती परिचित हैं की किस तरह एक निरक्षर व्यक्ति के जीवन मे एक साधना ने क्या परिवर्तन कर डाला ,ठीक इसी तरह इस ग्रह की साधना हैं ही इतनी आश्चर्यकारक अगर व्यक्ति इस साधना के प्रति विश्वास रखकर करें,और साधना को कोई चमत्कार दिखाने की अपेक्षा जीवन मे आमूल चूल परिवर्तन करने का मानस बना कर करे या किया जाए तो क्यों नही अपेक्षित परिणाम साधक या साधिका को प्राप्त होंगे .इस साधना को किसी भी बालक या बालिका के नाम से भी संकल्पित करके किया जा सकता हैं जिससे उनमे और भी अधिक बुद्धि तत्व की प्रबलता हो.

क्योंकि आज बिना उच्च शिक्षा प्राप्त किये बिना एक सफल जीवन की कल्पना करना पर इसके साथ जो इतने प्रतियोगी परिक्षाओ को पास करना होता हैं तब बिना बुद्धि तत्व या कुशाग्रता के कैसे संभव होगा उनमे सफल होना .

और जब साधना का सहारा लिया जाए, जीवन की प्रतिकूलताओ को दूर करने मे, तब बुद्धि तत्त्व की उपयोगिता तो हमेशा रहेगी .क्योंकि प्रतिकूलता जब हमारे सामने आती हैं तब उनसे कैसे निपटा जाए या उनका हल कैसे निकालना हैं उस समय सबसे जयादा बुद्धि तत्व की भूमिका सामने आती हैं.

यह साधना किसी भी बुधवार से शुरू की जा सकती है इस साधना को प्रारम्भ करने का समय रात्रि काल में १० बजे के बाद का रहे.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठ जाए साधक के वस्त्र तथा आसन पीले रंग के रहे.

सदगुरुदेव पूजन,भगवान गणेश पूजन और फिर इस साधना के लिए सीधे हाथ मे जल ले कर संकल्प ले फिर एक माला कम से गुरू मंत्र का जप जरुर करें.यह आवश्यक हैं क्योंकि साधना मे सफलता पाने के लिए सदगुरुदेव जी का वरद हस्त होना परम आवश्यक तथ्य हैं .

अपने सामने साधक बुध ग्रह का यन्त्र या चित्र बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर स्थापित करे. तथा उसका पूजन करे.

उसके बाद साधक निम्न मंत्र की २१ माला जाप करे. यह जाप साधक नवग्रह माला से या रुद्राक्ष माला से कर सकता है.

ॐ ब्रां बुं बुधाय फट्

(OM BRAAM BRUM BUDHAAY PHAT)

इसके बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन,कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप और जप समर्पण जरूर करे .

साधक को यह क्रम 5 दिन तक करना चाहिए. साधना समाप्ति पर माला को विसर्जित कर दे.

इस साधना को तो हर व्यक्ति को अपने जीवन मे स्थान देना ही चाहिए ही .क्योंकि यह बुद्धि तत्व हैं जो व्यक्ति के जीवन को किस ओर ले जाना हैं यह निर्धारित करती हैं .अतः इस बात को हलके मे नही बल्कि बहुत गंभीरता से लेना चाहिए ,साथ ही साथ व्यापार वर्ग से सबधित व्यक्ति के लिए तो यह वरदान स्वरुप हैं वह अगर इस साधना के महत्व हो समझे तो .इस तरह साधना जीवन के हर क्षेत्र के लिए एक उपाय रखता हैं ही .अब यह साधक पर निर्भर हैं कि वह किस रास्ते को चुनता हैं.

==

Budh Sadhana

in the life time, one cannot even imagine to count less importance of the wit, intelligence, or education and astrologer especially study planet Budh in the kundali with other aspects to understand about the margin of progress of the person and how much wit is developed and will be developed for the same.

One side, this planet is symbol of the intelligence; on the other hand how much success one may have in the business could also be calculated, to understand this fact, big role remains of budh planet, thus, in today's time no one can deny importance of the wit and higher education benefits.

But this boon of the nature is though given to all but not available to all and for this reason, astrologers provides various solutions time to time. But solutions though own positive facts then on other side there is also negative facts too and these negative aspects are made hidden.

But in sadhana world it is not that way; everyone is aware about story of the gem poet Kalidasa that how one illiterate person's life changed with sadhana, same way, sadhana related to this planet is very mysterious and sadhana process should be done with full faith. If one does the sadhana process with full dedication with no thought of watching miracle but with mentality to have drastic change in the life then one would surely receives the benefits. This sadhana can also be done for other person like kids to increase their intelligence.

Because today, it could not be even imagined to have successful life without higher education and with that one also needs to have success in various exams then how all these would be possible without wit and sharpness.

And when, help through sadhana is taken, to remove obstacles in the life, at that time too, importance of the intelligence would be necessity. Because, at the time of trouble, selection of the proper solution will also need to have sharp intelligence.

This process could be started from Wednesday. Time should be after 10'o clock in night.

After having bath, sadhak should sit facing north direction. Cloths and sitting mat should be yellow in colour.

Sadhak should first do Guru Poojan followed by Ganapati Poojan and than one should take water in the palm and take Sankalp for the sadhana. After that sadhak should at least do one rosary mantra chanting of Guru Mantra. This is important as for the success in the sadhana, blessings of the guru is necessary.

One should spread yellow cloth on wooden mat placed in front and on that cloth one should establish yantra of planet budh or picture of budh planet. One should do poojan of the same.

After that sadhaka should chant 21 rounds of the following mantra. Sadhaka should do this mantra chanting with NavGrah rosary or rudraksh rosary.

OM BRAAM BRUM BUDHAAY PHAT

(ॐ ब्रां बुं बुधाय फट्)

After this, once again sadgurudev poojan and one rosary of the guru mantra & Jap samarpan process should be done.

Sadhak should do this process for five days. When sadhana is completed, one should immerse the rosary.

One should attempt this sadhana in the life as it is intelligence which is base for the development of the life. Thus, this point should not be avoided and should be taken as very important aspect, with that, this process is boon for the person adjoined with business if one understands the importance of this sadhana. This way, sadhana field always owns every solution for every aspect of the life. Now, it depends on the sadhaka to choose their way.

Utsaah aUr Umang hetU mangal grah sadhana
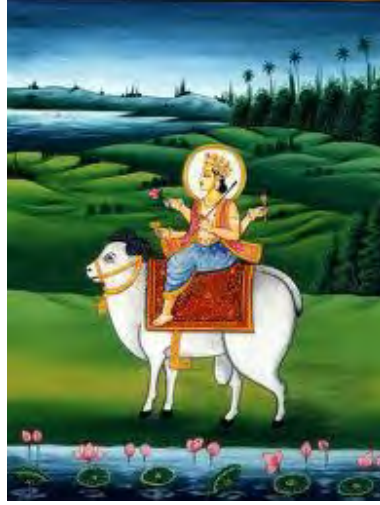
जीवन मे उत्साह उमंग के साथ स्वस्थ शरीर प्राप्ति हेतु अद्भुत साधना

मंगल साधना

नव ग्रहों मे मंगल को युवराज की संज्ञा मिली हुयी हैं पर इस ग्रह का देखा जाए तो जीवन मे बहुत ज्यादा ही महत्त्व हैं एक तरफ जहाँ यह उत्साह और धैर्य का प्रतीक हैं वहीँ दूसरी ओर लड़ने या लडाकू प्रवृत्ति का भी प्रतीक हैं यह शस्त्र का भी प्रतिनिधित्व करता हैं .

इस ग्रह की अपनी ही एक विशेषता हैं, जन्म कुंडली मे यदि यह ग्रह जितना ज्यादा कमजोर होगा उतना ही दुर्भाग्य का प्रतीक हैं ऐसे व्यक्ति पर शस्त्राघात हो सकता हैं या स्व आत्माघात भी वह कर सकता हैं कारण वह बिलकुल भी धैर्य शाली नही होगा ,वहीँ दूसरी ओर कुंडली मे इसकी अच्छी स्थिति इस बात का प्रतीक है

व्यक्ति उत्साह से भरपूर ओर धैर्य शाली भी होगा संतुलित विचार वाला भी होगा.पर इसका अत्याधिक शक्तिशाली होना इस बात की निश्चितता हैं कि व्यक्ति का गंभीर रुझान आध्यात्म की ओर होगा.

उत्साह उमंगता होना तो जीवन को सरस और उच्चता की ओर ले जाने के लिए एक आवश्यक तत्व हैं. इसके बिना जीवन क्या मानो एक ठूंठ सा.

यह ग्रह जब शुक्र ग्रह के संयुक्त हो जाए तब तो व्यक्ति की परवरिश बहुत ही सात्विक वातावरण मे करना चाहिए क्योंकि शुक्र और मंगल का योग अनेको बार बहुत विनाशकारी परिणाम भी ला सकता हैं अगर अन्य सभीतथ्य सहयोग न कर रहे हो और दशम भाव भी कमजोर हो तो,

वहीँ तीसरी ओर यह ग्रह तार्किक क्षमता और अद्भुत तर्क शक्ति प्रदान करता हैं जिसका भी यह ग्रह शक्तिशाली होगा उसकी वाक् क्षमता भी अद्भुत होगी.और जीवन मे प्रतिकूलताए तो होंगी ही ,क्योंकि जीवन हैं कि हर क्षण प्रतिकूलताओ से लड़ने का नाम हैं ,और देखा जाए तो क्या हम सभी हर पल अगली स्वास के लिए संघर्ष रत नही हैं?? , तो इस जीवन संग्राम मे हर हाल मे विजयी वही होगा जो हार न माने ,हर हाल मे अपने जीवन को अपनी शर्तों पर गतिशील करने के लिए जुटा रहे क्योंकि सफलता कुछ ऐसे का ही वरण करती हैं .

इस ग्रह की अनुकूलता अपने आप मे बहुत अर्थ रखती हैं क्योंकि यह लगातार लड़ने का गुण देता हैं यह धैर्य देता हैं और तर्क के साथ मंगल ग्रह एक बलिष्ठ शरीर भी प्रदान करता हैं एक सौष्ठव युक्त शरीर क्योंकि यह शरीर मे खून का भी प्रतीक हैं .

इस साधना को तो हर व्यक्ति को अपने जीवन का अंग बनाना ही चाहिए क्योंकि जीवन का प्रथम सुख तो निरोगी काया कही गयी हैं. तो इस ग्रह की साधना से अनुकूलता मिलना अपने आप मे सौभाग्य ही कहा जा सकता हैं .

साधक यह साधना किसी भी मंगलवार से शुरू कर सकता है साधना प्रारंभ करने का समय रात्री काल में १० बजे के बाद का ही उचित रहेगा .

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्र धारण कर के लाल आसन पर उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठे

अपने सामने बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर मंगल यन्त्र या मंगल ग्रह का चित्र स्थापित कर उसका पूजन करे.

सदगुरुदेव पूजन,भगवान गणेश पूजन और फिर इस साधना के लिए सीधे हाथ मे जल ले कर संकल्प ले फिर एक माला कम से गुरू मंत्र का जप जरुर करें.यह आवश्यक हैं क्योंकि साधना मे सफलता पाने के लिए सदगुरुदेव जी का वरद हस्त होना परम आवश्यक तथ्य हैं .

उसके बाद मूंगा माला से या रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की२१ माला जाप करे.

ॐ क्रां अं भोमाय अङ्गारकाय अं क्रां नमः

(OM KRAAM AM BHOMAAY ANGAARAKAAY AM KRAAM NAMAH)

इसके बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन,कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप और जप समर्पण जरुर करे

साधक को यह क्रम 5 दिन तक रखना चाहिए. साधना समाप्ति पर साधक माला को विसर्जित कर दे.

इस तरह यह सरल पर तीव्र प्रभाव दायक प्रयोग सम्पन्न होता हैं .जो आपके जीवन की अनेको न्युनताये समाप्त कर देता हैं.

===

Mangal Sadhana

In nine planet, Planet Mangal is titled as prince but when we see about this planet, it contain big importance in the life. On one side it is symbol of enthusiasm and patience and on other hand it is also symbol of the fight and fighting nature. This also represents weapons.

This planet have its own specialty, in the birth chart this planet would represent misfortune as much amount it is weak. Such people can suffer from the wounds of weapons or one may even attempt self destruction; reason is completely clear that person would not be having patience. On other hand, good position in birth chart is symbol of enthusiasm and patience with controlled thoughts. But if this planet is very strong that fact denotes that person will be having serious interest in spirituality.

Enthusiasm and rapture are important aspects to lead life of the person toward stability and superiority without which life of the person becomes non interesting.

When this planet is accompanied with Shukra planet at that time person's ward should be done in righteous atmosphere because many time Sukra and Mangal together position causes various destructive results when other positions does not cooperate and tenth position (dasham bhav) is also weak.

Whereas, third side, this planet provides incomparable logical power, the one who have this planet strong will be having incomparable speech power.

And there would be perversity because life is to fight against perversity and from one point of view don't we fight for the every next breath we want to take? So, the one who do not accept defeat will always win, the one who always will continue efforts to make the life according to will because success could be achieved with such person only.

Favorable conditions of this planet is very important as this gives power to keep on fighting this also gives patience and with logical power, it also provides powerful body as it is also symbol of blood in the body.

One should go for this sadhana because it is said that first happiness is healthy body. So, with this sadhana, to achieve favor is definitely a big fortune.

Sadhak can start this process from any Tuesday. Sadhana time should be after 10'o clock in the night.

After bath wearing red cloths, sadhak should sit facing north direction on red sitting mat.

Sadhak should establish Mangal Yantra or picture of the planet Mangal on the red cloth spread on the wooden mat in front. Sadhak should do poojan of the same.

Sadhak should first do Guru Poojan followed by Ganapati Poojan and than one should take water in the palm and take Sankalp for the sadhana. After that sadhak should at least do one rosary mantra chanting of Guru Mantra. This is important as for the success in the sadhana, blessings of the guru is necessary.

After this, sadhak should chant 21 rounds of the following mantra with coral rosary.

OM KRAAM AM BHOMAAY ANGAARAKAAY AM KRAAM NAMAH

(ॐ क्रां अं भोमाय अङ्गारकाय अं क्रां नमः)

After this, once again sadgurudev poojan and one rosary of the guru mantra & Jap samarpan process should be done.

Sadhak should do this process for five days. When sadhana is completed sadhak should immerse rosary.

This way, this simple but effective process is completed which vanish many deficiencies of the life.

sarv siddhi prad navgrah sadhana .

नव ग्रह की अनुकूलता हेतु अद्भुत गोपनीय साधना

एक संतुलित जीवन मे सारे रंग उचित अनुपात मे होते हैं और एक भी रंग या भाव न हो तो वह संतुलित जीवन नही कहा जा सकता हैं.ठीक इसी तरह कुंडली मे भी जो जो ग्रह रहते हैं वह अनेको कारण से, जन्म के हिसाब से या गोचर के हिसाब से या दशा महादशा के हिसाब से ही कोई न कोई ग्रह अशुभ परिणाम देता ही रहता हैं पर एक साथ सारे ग्रह की साधना क्या उचित हैं??? क्यों नही .

अनेको बार कुंडली मे ऐसी ग्रह स्थिति होती हैं जब कई कई ग्रह कमजोर स्थिति मे होते हैं तब ,या कई बार समय की कमी होने पर अलग अलग किस ग्रह की साधना की जाए यह व्यक्ति निर्णय नही कर पाता उस अवस्था मे नवग्रह की एक साथ साधना का अपना ही एक महत्त्व हैं .

पर नवग्रह साधना से अन्य ग्रहो की मतलब एक एक साधना को कम नही आंका जाना चाहिए क्योंकि इस समय साधना ऊर्जा सभी ग्रह शक्तियों मे बराबर बिभाजित हो जाते हैं पर एक एक ग्रह साधना मे हम अपने इच्छा परया किसी विशेष लाभ पर कहीं ज्यदा ध्यान एकाग्र कर सकते हैं.

जब बात साधना की हो ...साथ मे कोई भी व्यक्तिगत समस्या न हो बस साधना मे सफलता चाहिए यही एक मात्र लक्ष्य हो तब एक एक ग्रह कि अपेक्षा सारे ग्रहों की साधना एक साथ इस नवग्रह साधना के रूप मे कर लेना चाहिए . इस बात को भी ध्यान रखना चाहिए के इन्हें बस एक बार करके भूल जाने की साधना न मान ले बल्कि किसी साधना को प्रारंभ करने से पूर्ण अगर इस स्तर की नवग्रह साधना को एक दो बार यदि पूर्णता के साथ कर लिया जाए तो निश्चय ही सफलता कहीं ओर भी नजदीक होगी .

इस तरह से इन नवग्रह की साधना को या किसी भी ग्रह की अलग अलग साधना को भी, किसी साधना की सफलता से संयुक्त हुआ ही आप पाओगे क्योंकि एक अर्थ मे सारा विश्व एक सूत्र मे पिरोया हुआ हैं इस बात को ध्यान मे रखने मे हर साधना और हर मंत्र से इन नव ग्रहो को सम्पर्कित पाओगे .

यह साधना तीव्र प्रभावकारी है तथा साधक सभी ग्रह का आकर्षण अपनी तरफ कर लेता है.

यह साधना से साधक के सभी ग्रह अनुकूल होते है तथा साधक के सभी दोष समाप्त होते है

यह साधना साधक रविवार से शुरू करे. समय दिन या रात्रि का कोई भी हो लेकिन रोज साधना का समय एक ही रहना चाहिए. दिशा उत्तर रहे.

साधक को स्नान आदि से निवृत हो कर अपने सामने किसी बाजोट सफ़ेद वस्त्र बिछा कर विशुद्ध पारद शिवलिंग स्थापित करे. विशुद्ध पारद शिवलिंग अगर साधक के पास उपलब्ध नहीं हो तो किसी भी प्रकार के शिवलिंग का प्रयोग कर सकता है. सम्पूर्ण फल की प्राप्ति के लिए विशुद्ध पारद शिवलिंग स्थापित करना उत्तम रहता है क्यों की मूलतः यह आकर्षण साधना है तथा विशुद्ध पारद जितनी आकर्षण क्षमता किसी और तत्व में नहीं होती.

सदगुरुदेव पूजन,भगवान गणेश पूजन और फिर इस साधना के लिए सीधे हाथ मे जल ले कर संकल्प ले फिर एक माला कम से गुरू मंत्र का जप जरुर करें.यह आवश्यक हैं क्योंकि साधना मे सफलता पाने के लिए सदगुरुदेव जी का वरद हस्त होना परम आवश्यक तथ्य हैं .

साधक शिवलिंग का पूजन करे इसके बाद साधक उसके पास चावल से ९ ढेरी बनाये तथा हर एक ढेरी पर एक सुपारी को रखे. तथा इन्ही को ९ ग्रहों का प्रतीक मान कर उसका पूजन करे. इसके बाद साधक नवग्रह माला से या रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र का ९ माला जाप करे.

ॐ जुं ह्रां श्रां क्रां ब्रां ग्रां द्रां प्रां भ्रां स्रां जुं फट्

(OM JUM HRAAM SHRAAM KRAAM BRAAM GRAAM DRAAM PRAAM BHRAAM SRAAM JUM PHAT)

इसके बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन,कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप और जप समर्पण जरुर करे.

यह क्रम साधक को ९ दिन तक करना चाहिए. इसके बाद साधक शिवलिंग को पूजा स्थान में स्थापित कर दे माला तथा सुपारी और चावल को उसी वस्त्र में पोटली बना कर नदी, समुद्र या तालाब में विसर्जित कर दे.

इस तरह से यह दुर्लभ और सरल विधान आपके सामने हैं.समय समय पर इन साधनाओ को करते रहना चाहिए ताकि जीवन मे एक निश्चिंतता बनी रह सके.और व्यर्थ मे हमारी उर्जा ,उन प्रतिकूलताओ से सिर्फ लड़ते रहने मे नष्ट न होती रहे बल्कि हम भी श्रेष्ठ रचनात्मक कार्य करते रह सकें.

==

Nav Grah Sadhana

In the balanced life all the colours remains in the proper amount and if one aspect or feel is not balanced then it could not be termed as life. Same way, all planets in kundali or birth chart with many reasons, by birth or with position or with Dasha MahaDasha may give inauspicious results but when sadhana of all planets if done all together then? Why not!

Many times in birth chart such position of the planets take place that many planets all together are seems weak, or many time because of short running of the time, it becomes difficult to understand which sadhana of which planet should be done separately, in such situation, sadhana of Nav Grah together is very important.

But with this fact too, sadhana related to specific planets could not be taken lightly because this time sadhana energy will be divided equally in all the planet powers while in specific planet sadhana we can concentrate more on our wishes or specific benefits.

When it is about sadhana and not about specific problems and only desire is to achieve success in the sadhana at that time sadhana of nine planets all together could be done. Another point here to be taken care is this sadhana is not to be forgotten after doing it one time but before starting sadhana if such rare sadhana is completed then desired results comes closer.

This way sadhana related to nine planets rather together or individual is found to be connected with success in the specific sadhana because on one point complete universe is adjoined with one thread. With this point in mind, one may understand connectivity of mantras with these nine planets

This sadhana is acute effective and sadhak can attract every planets towards one's self.

Every defect of the sadhaka is vanished and all planets becomes favourable to sadhaka.Sadhak should start this process from Sunday. Time could be any of day or night but daily time should remain same. Direction should be north.

After having bath, in front sadhak should spread white cloth on wooden mat and establish pure Paarad Shivalinga. If Pure Paarad Shivalinga is not available to sadhaka then any shivalinga could be brought in process. For the complete results it is better to establish pure paarad shivlinga because basically this is attraction sadhana and paarad is having most attraction power among all elements.

Sadhak should first do Guru Poojan followed by Ganapati Poojan and than one should take water in the palm and take Sankalp for the sadhana. After that sadhak should at least do one rosary mantra chanting of Guru Mantra. This is important as for the success in the sadhana, blessings of the guru is necessary.

Sadhaka should do shivalinga poojan. After that sadhaka should prepare nine agglomerate near parad shivalinga and on every agglomerate one should place betel nut.

And believing them as symbol of nine planets sadhaka should do poojan of them. After that with NavGrah Rosary or rudraksha rosary sadhak should chant 9 rosary of the following mantra

OM JUM HRAAM SHRAAM KRAAM BRAAM GRAAM DRAAM PRAAM BHRAAM SRAAM JUM PHAT

(ॐ जुं ह्रां श्रां क्रां ब्रां ग्रां द्रप्रां भ्रां स्रां जुं फट्)

After this, once again sadgurudev poojan and one rosary of the guru mantra & Jap samarpan process should be done.

This process should be done for nine days. After that shivaling should be established in the worship place. Rosary betel nut and rice should be tied in that cloth and should be immersed in the river, sea or lake.

This way this rare and easy process is completed. Time to time such sadhana processes should be done to maintain safeness or assurance. And needless loss of the energy in fighting with troubles could be used in nice creative works.

रोग की निवृत्ति के लिए सरल साधनाए जैन धर्म से

Rog nivRiti ki saRl sadhnaye jain dhaRm se

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोएसव्वसाहूणं

जैन धर्म से -अद्भुत सरल साधनाए

.

शास्त्रों मे पहला सुख निरोगी काया बताया गया हैं, सारे सुख हो पर व्यक्ति का स्व शरीर ही स्वस्थ न हो तो सब कुछ होते हुये भी सब बेकार हैं.पर आज तो घर घर मे नही बल्कि यह कहा जाए कि हर व्यक्ति ही रोगी हीं तो कहीं कुछ ज्यादा सही होगा ,आयुर्वेद मे स्वस्थ की परिभाषा मे यही कह गया हैं कि वह जो अपने आप मे स्थित हो वही स्वस्थ हैं .

इसलिए यह मान ही लिया जाए कि हर व्यक्ति किसी न किसी रोग से ग्रस्त हैं ही .और हर व्यक्ति इन रोगों से बचने के लिए हाथ पैर मारता ही हैं .साधनात्मक उपाय भी बहुत आज प्राप्त हैं ,यदि अवस्था बहुत आधिक सोचनीय न हो तो इन उपायों पर ध्यान देना ही चाहिए.

पूज्य पाद सद गुरुदेव जी ने मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञान मे एक बार जैन धर्म से सबधित पांच महामंत्र जिन्हें नमोकार महा मंत्र कहा जाता हैं से सबंधित साधना एक साधक के अनुभव के साथ प्रकाशित कराई हुयी थी.उन साधक ने क्यों और कैसे इस साधना मे इस महामंत्र की साधना मे सफलता मिल ही जाए इसके लिए कुछ स्वानुभूत बाते बताई .(जिसके माध्यम से उन्होने मृत्यु को भी पीछे धकेल दिया था)और उन्होंने कहा भी कि जब तक इन बातों को सच मे अपने जीवन मे पूरी तरह से उतार न लिया जाए सफलता कम से कम इन महामंत्रो से जितनी मिलनी चहिये वहसम्भव नही हैं .

उन्होने स्पस्ट किया की जैन धर्म का आधार भूत स्तंभ दया हैं वह भी सम्पूर्ण प्राणी मात्र से हैं अतःजब भी इन प्रयोगों को करना हो तो संसार के समस्त ज्ञात अज्ञात जीव धारियों से अपने जाने अनजाने मे हुयी गलतियें और अपराधों के लिए क्षमा मांग लेना चाहिये यह क्षमा ह्रदय से होना चाहिए, न की केबल शब्दों से ,और जीवन मे पवित्रता का भान होना ही चाहिए ही.

सबसे पहला प्रयोग तो यही की इसके बाद आप नमोकार महामंत्र का जप करें और पूरी तल्लीनता के साथ,जितना आप को समय मिले ,साथ ही साथ मान मे यह भाव लगातार रखा जाए कि अब मेरे मन मे किसी के प्रति कोई दुर्भाव या द्वेष नही हैं. बिना इस बात को ह्रदय मे उतारे आप कितना भी मंत्र जप करेंगे वह उतना असर नही देगा ,जितना की आपकी इच्छा हैं .

आप कुछ ही दिन के अंदर देखेंगे की किस तरह आपका शरीर और भी स्वस्थ हो गया.

दूसरा प्रयोग: संसार के समस्त जीव धारियों से क्षमा याचना करने के बाद अब हम रोज स्नान करके इन मंत्रो का मात्र १०८ बार उच्चारण करें . और आप स्वयम परिणाम देखेंगे कि किस तरह आपका शारीर स्वस्थ होता जा रहा हैं .

मंत्र:

ॐ णमो आमि सहि पत्ता ण म्

ॐ णमो खे लो सहि पत्ता ण म्

ॐ णमो ज लो सहि पत्ता ण म्

ॐ णमो सव्वो सहि पत्ता ण म् स्वाहा ||

खासकर जो भी मंत्र जो रोग आदि के निवारण के लिए हो तो सबंधित सभी बातें मतलब जप आदि व्यक्ति को स्वयं ही करना चाहिए जब तक आपका शरीर चल रहा हो तो मतलब मंत्र जप आदि मे आपको कोई समस्या न हो.

यह सरल साधनाए हैं पर यह तो व्यक्ति के देखने पर ही निर्भर करता हैं .

EASY SADHNAS FROM JAIN RELIGION FOR GETTING RID OF DISEASES

Disease-less body has been described as first pleasure in shastras. One may have all the pleasures but if person's own body is not healthy then all is useless despite having everything. But today not in every home rather we can say that every person is suffering from disease then it will be more appropriate. In Ayurveda, it is said about the definition of health that the one who is situated in himself is healthy.

Therefore one can easily say that every person is afflicted with one disease or other. And every person tries hard to save himself from these diseases. Sadhna-centric remedies are also available today. If the condition is not very much critical then one should pay attention to these remedies.

Param Poojya Sadgurudev once had published one sadhna along with experience of sadhak relating to Jain religion's five Maha Mantras which are known as Namokaar Maha Mantra. How and why one can attain success in sadhna of this Mahamantra, sadhak told several self-experienced facts regarding it (by which he was able to win over death).And he also said that if these facts are not imbibed completely in life in reality then success which can be attained by at least these Maha Mantras is not possible.

He clarified that founding pillar of Jain religion is mercy, that too with entire creatures. Therefore, whenever one has to do these prayogs then one should apologize to entire known-unknown creatures of world for all the mistakes and crimes committed knowingly or unknowingly. Apology should be from heart, not only from words. And purity should be reflected from life.

First prayog is that you chant Namokaar Mahamantra with full concentration as much as you get time.

Beside it, start developing this feeling continuously that now I do not have any bad feeling or animosity for anyone in my mindYou will see with in few days that how your body has become healthier.

Second Prayog: After apologizing to entire life creatures of world daily, we should take bath and pronounce these mantras just 108 times. You will see results yourself that how your body is getting healthier.

Mantra:

om nmo sahi pattanam

om namo khe lo sahi pattanam

om namo ja lo sahi pattanam

om namo savvo sahi pattanam.

Especially all the mantra which are for curing disease then all the related things like chanting etc. should be done by the person himself if your body is in running condition(In other words, you are not feeling problem in chanting mantra)

sarp bhay se mukti hetu sadhana

सर्प भय से मुक्ति हेतु अत्यंत सरल विधान

यह तो सुविज्ञात तथ्य हैं कि कोई भी जानवर सामान्यतः आप पर जब तक हमला नही करता हैं जब तक की आप उसके प्रति कुछ सुरक्षात्मक या हमला करने की भावना न लिए हो या उसे आप से कोई खतरा न महसूस हो रहा हो ,

जिन्हें जंगल मे जाना पड़ता हैं उन्हें सर्प आदि से सामना करना ही पड़ता हैं, और वानस्पतिक तंत्र मे और तंत्र जगत मे अनेको ऐसी साधनाए हैं जैसे पर्वत साधना , वन दुर्गा साधना जिनको सम्पन्न करने के बाद साधक या साधिका को कोई भी समस्या नही आती हैं पर जब बात हमारे घर परिवार कि हो तो खासकर वर्षा ऋतू मे कभीकभी सर्प आदि का भय बहुत बढ़ जाता हैं. तब कैसे इनसे बचे .

एक सामान्य सा उपाय तो यह हैं जो अनेको को ज्ञात हैं कि "मुनिराज आस्तिक नमः" इस मंत्र को हमने घर के दरवाजे के बाहर तरफ लिख दिया जाए तो भी सुरक्षा बनी रहती हैं.अगर घर के अंदर सर्प का प्रवेश हो गया होतो कुछ धूप आदि उसी कमरे मे जला दे और इसी मंत्र का जप करले.दरवाजा आदि खुला छोड़ दे कुछ देर मे सर्प स्वयं ही वहां से भाग जाएगा .

सर्प आदि के भय से बचने के लिए बहुत सारे विधान सामन्यतः मिल जाते हैं और लगभग सभी का कुछ न कुछ प्रभाव रहता ही हैं .

ऐसा ही एक सरल सा विधान तो कई कई आचार्यो और तंत्र विज्ञों द्वारा प्रशंशित हैं.हालाकि यह साबर मंत्र हैं और इसका उपयोग अपनी सुरक्षा के लिए ही किया जाता हैं

मंत्रः

बाबा फरीद की कामरी अब अन्धयारी निश , तीन चीज बांधू नाहर चोर विष

इस मंत्र को पढते जाए और चारो ओर सरसों फेंकते जाए.

सर्प वहां से भाग जायेगा.

एक ओर सरल सा प्रयोग बहुत प्रशंशित रहा हैं

वह यह की रात मे सोते समय मात्र एक बार पढकर तीन बार हाथ से ताली बजा दें

सर्पासर्प भ्रद्र ते ,दुरं गच्छ महा विष

जनमेजय यज्ञान्ते, आस्तिकं वचनं स्मर.

आस्तिकस्य वचं स्मृत्वा ,यः सर्पो न निवर्तते

सप्तधा भिद्यते मुर्धीन ,शिश वृक्ष फलं यथा

==

VERY EASY VIDHAAN TO GET RID OF FEAR FROM SNAKES

It is well-known fact that generally, no animal attack you until and unless you have defensive or attacking feeling towards him or that animal is feeling danger from your side.

Those who frequently go to forest, they have to face snakes etc. And there are such sadhnas in Vanaspitak tantra and tantra world like Parvat sadhna, Van Durga Sadhna upon accomplishing it sadhak or sadhika does not face any problem. But when we talk about our family, especially in rainy season, then sometimes fear from these snake etc. increase many times. Then how one can get saved from it.

One normal remedy is which is known by many that by writing the mantra "Muniraaj Aastik Namah" outside the door of your home, one feels secured. If snake has entered inside the home them light some dhoop in that room and chant this mantra. Keep open the doors. After some time snake will run away from there.

Generally one can find so many Vidhaans to save from snake fear and approximately all have some influence or the other.

One of such easy Vidhaans is appreciated by many acharyas and tantra proponents. Though it is sabar mantra and it is used only for one's own safety.

Mantra::

BABA FAREED KI KAAMRI AB ANDHYAARI NISH, TEEN CHEEJ BAANDHU NAAHR CHOR VISH.

Keep on reading this mantra and throw mustard in all directions.

Snake will run away from there.

One more easy prayog has also been very much appreciated.

At the time of sleeping in the night, just read this mantra once and clap with your hand three times.

SARPASARP BHADR TE, DOORAM GACHH MAHA VISH

JANMEJAY YAGYAANTE, AASTIKAM VACHNAM SMAR|

AASTIKASY VACHAM SMRITVA, YAH SARPO NA NIVARTTE|

SAPTDHA BHIDYTE MURDHEEN, SHISH VRIKSH PHALAM YATHA

Bichhchhu ke jahar se Bachne hetu

बिछ्छू आदि विषैले जीव के काटने पर विष उतारने हेतु

सर्प और बिछ्छु आदि का जहर उतारने वाले लगभग हर जगह मिल जाते हैं वहीँ दूसरी ओर आज उच्च शिक्षित व्यक्ति इन सब को संदेह की दृष्टी से देखता हैं और विश्वास करने को तैयार् ही नही होता हैं. पर मंत्र शास्त्र किसी के विश्वास आदि पर टिका नही हैं. पर जब इनके द्वारा रोगी को ठीक होते देखता हैं तब वह भी आश्चर्य चकित हो ही जाता हैं .

अब हर प्रयोग के लिए लाख या सवा लाख मंत्र जप करना अनिवार्य नही हीं हैं और ऐसे प्रयोग हैं जो बहुत ही कम मात्रा मे जप करने पर और किसी भी पर्व आदि पर थोडा बहुत हवन करने स्वत: सिद्ध हो जाते हैं .

और कुछ मंत्र तो स्वयम सिद्ध की श्रेणी मे होते हैं जिन्हें सिर्फ प्रयोग करना ही शेष रहता हैं.औरएक ऐसा ही स्वयं सिद्ध मंत्र आपके लिए... बिच्छु के डंक मारने का दर्द बहुत तीव्र होता हैं उस समय अगर ऐसे कुछ उपाय अपनाए जाए तो रोगों को बहुत राहत हो जाती हैं.

हाँ जब भी सर्प काटने या बिच्छू के डंक मारने की बात आये तो चिकित्सीय सहायता पहले देखना चहियेउसमे कोई भी कमी नही करना चाहिए, हाँ जब तक वह संभव नही हो पा रहा हो तब तक पुरे विश्वास के साथ इन उपायों को अपना कर लाभ पाया जा सकता हैं.

याहं पर जो मंत्र दिया जा रहा हैं वह भी अनेको विद्वानों का परीक्षित और प्रशंशित हैं

मंत्र:

जे संदेह लेह आवे,तेहि पानी परोरि पियाई देव

कायो पाए शिर मानिक रामुप मोडो,मरि जासी अन बांधनो

पानी पीवै बाँधी उतरि जसि.

इस मंत्र को पढते जाए और सात बार जहाँ बिच्छू ने काटा हैं उस जगह पर हाथ फेर दें,उसका विष उतर जायेगा.

===

FOR REMOVING THE POISON OF POISNOUS CREATURES LIKE SCORPION

One can find persons everywhere who can remove poison from bites of snakes and scorpion etc. On the other hand, highly educated person see all this with suspicion and is not willing to believe it.But mantra shastra does not rest on anybody’s trust. However when he sees diseased person getting cured by it, he is also amazed.

Now for every prayog 1 lakh or 1.25 lakh mantra chanting is not necessary. There are such prayogs which can be accomplished automatically by chanting them in very small number and doing little bit hawan on any festival.

And some mantras come under the category of self-accomplished in which only doing prayog is necessary. One such prayog for you all………….pain from scorpion bite is very intense. At such times, if these remedies are followed then patient gets huge relief.

But whenever we talk about snake or scorpion bite, one should first look for medical assistance. There should be no relaxation in it.But if still nothing is happening then with full confidence, one can take benefits from these prayogs.

The mantra given here is tested and appreciated by various scholars.

Mantra:

Je Sandeh Leh Aave ,Tehi Paani Parori Piyaayi Dev

Kaayo Paaye Shir Maanik Raamup Modo,Mari Jaasi An Baandhno

Paani Peevai Baandhi Utari Jasi .

Keep chanting this mantra and rub your hands seven times on the place where scorpion has bitten. The poison will vanish.

SWARN RAHSYAM -12

वाम-तंत्र में रक्त बिंदु और श्वेत बिंदु को सम्मिलित कर कई अद्भुत शक्तियों को प्राप्त किया जा सकता है पर ये भी सत्य है की ये साधनाएं अत्यंत ही गुप्त हैं और गुरुगम्य ही रखी गयी हैं.

ऐसा क्यों भला?????????????? मैंने पूछा.............

क्यूंकि लोगो को वाम-तंत्र की सही परिभाषा ही नहीं पता है तो ऐसे में वे उन गोपनीय साधनाओ को कैसे जाने के अधिकारी हो सकते हैं .... वाम मांर्ग का नाम आते ही ऐसे नाक सिकोड़ते हैं जैसे किसी घृणित वस्तुको देख या छू लिया हो . जबकि वाम मार्ग का मतलब ही है शक्ति प्राप्ति का मार्ग .

हाँ इस मार्ग में दासत्व का भाव निषेध है , ये मार्ग तंत्र शास्त्र में सिंह मार्ग भी कहलाता है. सम्मान, ऐश्वर्य , निर्जरा देह और अनंत शक्तियां सहज ही तो प्राप्त हो जाती हैं इस मार्ग का अनुसरण करने से .

मैंने कहा की क्या ये मार्ग सामान्य साधकों के लिए नहीं है ???????????

नहीं ......बिलकुल नहीं .... क्योंकि जिसका अपने चित्त पर नियंत्रण ही न हो ....जिसमे पौरुषता का आभाव हो वो कदापि इस मार्ग पर नहीं चल सकता .

सामान्य व्यक्ति बिंदु स्खलन को चरम सुख या आनंद प्राप्ति का कारण मानता है, पर सिंह मार्ग का साधक बिंदुउत्थान को चरम सुख ही नहीं अपितु परमानन्द का कारक मानता है. इस मार्ग पर एक ही उक्ति का अनुसरण करना होता है की " जो भी करो पूर्ण विवेक के साथ करो" आप खुद ही सोचो की सहवास तो हो रहा है पर स्खलन ध्येय ही नहीं है . बल्कि उस उर्जा योग के द्वारा अपने सप्त शरीर को पूर्ण चैतन्य बना लिया जाता है. क्या ये सामान्य साधक के लिए सहज है!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!

और आपको क्या लगता है की कीमिया क्या है?????? उन्होंने पूछा .

फिर स्वयं ही उत्तर देते हुए कहने लगे की सदगुरुदेव ने इस रहस्य को बहुत ही सूक्ष्मता के साथ स्पष्ट करते हुए बताया था की" **कीमिया का अर्थ निम्न धातुओं को उच्च या मूल्यवान धातुओं में परिवर्तन मात्र नहीं है ना ही शरीर को निर्जरा या रोगमुक्त करना कीमिया कहलाता है .... ये परिभाषाएं ही गलत हैं . नकारात्मक ऊर्जा को सकारात्मक ऊर्जा में पूरी तरह परिवर्तित कर देना ही कीमिया कहलाता है". क्योंकि जब नकारात्मक का पूर्णरूपेण परिवर्तन सकारात्मक में हो जाता है तो जो बचता है हमेशा वो बहुमूल्य ही होता है.**

लोग बरसो बरस लगा देते हैं स्वर्ण का निर्माण करने में या ताम्बे, चांदी, सीसे, रंगे ,पारद को स्वर्ण में परिवर्तित कर देने में ..... पर क्या वे ये जानते हैं की इस क्रिया के मूल में कौन सा रहस्य कार्य करता है . नहीं वे ये नहीं जानते हैं , यदि वे जानते होते तो उनका नाम भी उन सिद्धों में सामिल होता जिन्होंने पारद या रस का अनुसन्धान या साधना कर परम पद को पा लिया है.

जिस रहस्य की कड़ियाँ मेरे सामने खुल रही थी उन्हें समेटते हुए मैंने अपनी जिज्ञासा उन महानुभाव के सामने रखी की 'वो क्या रहस्य है जो धात्विक या आंतरिक कीमिया के मूल में है, जिससे सृजन की क्रिया संपन्न होती है'.

सूक्ष्मता के साथ जब हम पदार्थों या आत्मिक शक्तियों का अवलोकन कर उनमे छुपी हुयी सकारात्मक ऊर्जा को पहचान कर उनके सदुपयोग की कला का विकास कर लेना ही कीमिया के गूढ़ रहस्य है जब ऐसी योग्यता हम प्राप्त कर लेते हैं , तब हमें ये सहज ही ज्ञात हो जाता है की किस पदार्थ या तत्व का कब और कैसे कहाँ पर प्रयोग करना है. मैंने कहा ना की विवेक पूर्ण किया गया कार्य ही यश और ऐश्वर्य की प्राप्ति कराता है . सिद्धि ऐसे ही व्यक्ति या साधक की अनुगामी होती है .

बगैर गुरु या शास्त्र का आश्रय लिए जो भी इस मार्ग पर बढ़ता है वो असफल ही होता है .....मार्गदर्शन में किया गया सतत अभ्यास सफलता देता ही है . मैं धातुवाद के लिए यहाँ कुछ बातें बताना चाहूँगा की...

(एक लेख में उन रहस्यों का वर्णन अत्यधिक दुष्कर कार्य है, और उन सूत्रों को टुकड़ों में देना लेख के साथ अन्याय भीहोगा .अतः अगली कड़ी में रक्त बिंदु, श्वेत बिंदु द्वारा धातुपरिवर्तन के जो सूत्र मुझे महानुभाव द्वारा बताये गए थे उनका स्पष्टीकरण आपके समक्ष मैं शीघ्र ही करूँगा ताकि .आप स्वयं ही देखें की सिद्धाश्रम परंपरा प्रदान कर सदगुरुदेव ने अनमोल कृपा वृष्टि हम सभी पर की है. कितनी उदारता से उन्होंने सभी कुछ तो हमारे समक्ष रख दिया , अब हम उनका लाभ न ले पाए तो दोषी कौन है??????????)

==

By including Rakt bindu and shwet bindu in the Waam Tantra so many wonderful powers can be achieved.But this is also true that these Sadhnas are very secretful and Gurugamya (under guru's guidence)

So I asked… Why is it like that??

Because rightfully people are not eligible to know about it as they don't know the exact definition of Waam Tantra.By mere pronouncing the name or instigating it they wring their nose like anything as they have touched something bad thing. As long as I know it is considered as the exact way of achieving power.

Yaa but on this path the servitude is completely banned i.e. prohibittted. Is also has been known as the Path of Lion (Sinha marg) in tantra. Respect, Wealth, indistinguishable body & infinite power is easily availble on this Path..

Did I said that this path is not for common sadhaks????

Yes of course not…because one who cannot control his consious & lack the maniless in him cant step forward on this path.

A common person assumes the ultimate happiness in stumbling(bindu skhalan). But on sinha marg sadhak feels n realize the ultimate happiness in reinvigoration i.e. raising up(Bindu Utthan).

It is a paramanand for him.Well on this path only one utterence has to be followed i.e. "Do whatever with full consiousness" (Jo bhi karo purna vivek ke saath karo) just think in this way, that the action of intercourse is happening but my aim is not to stumble rather I could awaken my whole seven bodies inside me via this urja yog.

Does it is possible for a normal sadhak???

He asked…What do u think? Is it kimiya???

After saying this, he only started answering that by understanding us Sadgurudev told me "**that 'kimiya' doesn't mean only to converting the metal into valuable metal nor keeping away our body from diseases.Actually all these defination are basically wrong. "Converting Negativity into Positivity" I mean to say converting negative energy into positive energy is known as KIMIYA…"**

When negative is converted in to positive,whatever remained is always considered as so valuable..

Seriously I have seen people spend years n years for gold making or just converting copper,zinc,silver,alchemy into gold…but do they actually know which the secret is behind of all of this… answer is No, no my dear they really don't know…

And if Yes, then they may also recognised and included into such famous list which has been considered as the master or siddha who have achieved the param prapti in alchemy.

While winding my all curiosity regarding the various dimensions of the untouched secret of kimiya, was revealing infront of me I asked "what is the secret behind the internal kimiya by which the process of srajan can be accomplished".

With minute observation when inspect the padarth and the atmik power and recognised the positivity of it and embibe the art of taking advantage and progressing ourself is the real secret of kimiya.And when we achieve the caliber of recognising it,then it becomes very easy for us to know or how to place,when to place and in which way it has to be use. As I alreay said that the work which is accomplished with full of consiousness may succed always n forever.

Therefore it is said that the siddhi is the follower of such persons only who follow their insticts..

Without the guidence of revered Guru and the shastra one who walk down on this path would face failures. Under guidence the continous practice leads us to the unlimited success.

Especially I would like to tell some thing for the alchemist…

(It is really tough to denote or specify everything in one article, and publishing that incomplete sootra or in part would be great unjustice with them. So in next arcticle I would disclosed the formulaes of conversion of metal via Rakt Bindu shwet bindu which I learned under that mahanubhav's guidence and soon u ll find the explanation regarding it. You personaly would feel that sadgurudev had blessed us under the family line of siddhashram .How gracefully and kindly he had expressed everything infront of us… if we wouldn't take benefit of it then who would be responsible for it???? Hnnna tell me)

So think about it…

सरल मानसिक जप युक्त लक्ष्मी साधना

EFFECTIVE SARAL mansik jap yukt LAKSHMI PRAYOG

धन धान्य प्रदाता लक्ष्मी प्रयोग अब इसे एक बार तो करके देखिये

न केबल आधुनिक युग मे बल्कि प्राचीन काल मे भी लक्ष्मी तत्व की महत्वता रही ही हैं और हमारे प्राचीन ग्रंथ इस बात से ,अनेको उद्धरणों से भरे पड़े हैं.जीवन के आवश्यक चार पुरुषार्थ मे से इसका स्थान दूसरा हैं .यही इसकी महत्वता को प्रदर्शित करता हैं .

हमारे द्वारा आपके सामने अनेको साधनाए सामने प्रस्तुत किये जाते हैं जिनमे से अनेको अति सरल भी हैं और हमने आपके सामने कई कई लक्ष्मी साधनाए भी रखी हैं. इस बार इस दुर्लभ साधना को भी रख रहे हैं , सदगुरुदेव जी ने कहा हैं कि बीज मंत्रो की अपनी ही एक शक्ति होती हैं.

क्योंकि मंत्रो के साधरणतः निर्माण मे कोई न कोई बीज मंत्र का उपयोग हुआ ही रहता हैं .इसलिए बीज मंत्र को कभी भी कम करके नही देखा जाना चाहिए .क्योंकि एक छोटे से बीज मे एक पूरा विशाल वृक्ष छिपा रहता हैं .

इस बार हम आपके सामने जिस साधना विधान को रख रहे हैं उसके बारे मे सदगुरुदेव जी लिखते हैं कि इसका चलते फिरते मानसिक जप किया जाना हैं और और ऐसा करते रहने से कुछ समय मे ही आप इस मंत्र की अनुकूलता पाने लगते हैं .क्योंकि मानसिक जप करने पर शुद्धि अशुद्धि वाले नियमों का बंधन भी ढीला पद जाता हैं और आप पैदल चलते चलते उठते बैठते इस मंत्र का जप कर सकते हैं .

और वेसे भी हर साधक और साधिका को अगर वह गुरू साधना यदि लगातार कर रहा हैं तो साथ ही साथ लक्ष्मी मंत्र और गणेश मंत्र को भी दैनिक पूजा मे स्थान देना ही चाहिए .क्योंकि लक्ष्मी तत्व तो एक अनिवार्य अंग हैं इस जीवन को सुचारू रूप से गतिशील करने मे.

इस मंत्र के साथ कोई और विधान नही हीं हैं बस मानसिक रूप से जब समय मिले आपको इस मंत्र को करते रहना हैं और आप इस मंत्र जप के परिणाम से भी आश्चर्य चकित हो जायेंगे अगर आप सदगुरुदेव और इस मन्त्र और अपने प्रति पूर्ण विश्वास रखते हैं तो .

मंत्र:

==

Easy Mental Jap included Laxmi Sadhna

Not only in Modern era but also in ancient era **Laxmi Tatva** kept a different importance in itself. And in our ancient texts displays many examples of it. In four Manliness of life 'Arth' it is on second rank. This itself shows a great importance of it.

Many sadhnas are presented by us to you from which many process are easy and we have presented many laksmi Sadhnas also. This time we are presenting this rare sadhna infront of you. Sadgurudev ji said, Beej Mantras have their own power, because generally in formation of mantras any of beej mantra is used in creation. Therefore beej mantra should not be underestimated as this is also a known fact that a small beej i.e. seed contain a huge tree in it..

This time whatever sadhnas we have presented in front of you, about whom Sadgurudev said once, this mantra Jap could be done any time in and by continuous chanting you get compatibility of this mantra.

because mental chanting doesn't get affect by external pure impure factors. While walking, sitting roaming any time this mantra can be chanted.

And by the way each sadhak and Sadhika, who performs Guru Sadhna on daily basis, should include lakshmi mantra and Ganesh mantra along in daily worshipping also. As Lakshmi tatva is the most important part of smooth movement of materialistic life.

There is no other process along with this mantra. Just mentally whenever you can chant this mantra just do it and then you will get surprise from the results, only if you believe on Sadgurudev, yourself and towards this mantra.

Mantra – Shreem

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

TOTKA - VIGYAN

इनको एक बहुत ही सरल साधना भी कहा जाता हैं .यह हर बार सफल होंगे ऐसा तो नही कहा जा सकता हैं पर सफलता का प्रतिशत बहुत अधिक रहा हैं फिर जीवन की हर् समस्या के लिए..हर बार बृहद बृहद साधनाए करना तो उचित सा नही दिखाई पड़ता तो ऐसे समय कई कई बार ये सरल से प्रयोग जिन्हें टोटके भी कहा जाता हैं बहुत असर दायक सफल रहे हैं तो..

1. भगवती लक्ष्मी के चित्र के सामने ९ बत्तियाओ वाला दिया/दीपक जलाये यह धन लाभ की स्थिति बनाता हैं .

2. जीवन मे कठिनाईयां यदि बहुत बढ़ गयी हो तो जिस पानी से आप स्नान कर रहे हो उसमे थोड़े से काले तिल डाल ले फिर स्नान करें अनुकूलता प्राप्त होगी .

3. जीवन की अनेको समस्याए जो लगातार सामने आती रहती हैं, उसके निराकरण के लिए व्यक्ति यहाँ वहां भागता रहता हैं पर यदि किसी भी अमावस्या को किसी भी गरीब व्यक्ति को भोजन कराएं और उसे वस्त्र और दक्षिणा दे तो उसके पितृ वर्ग प्रसन्न होते हैं और उनकी प्रसन्नता पाने से आपके जीवन के कार्य सफल होना प्रारंभ हो जायेंगे.

4. कुछ ऐसी ही स्थिति हम सभी के कुल देव या कुलदेवी के बारे मे हैं साधारणतः सिर्फ कुछ लोगों को छोड़ दें तो त्यौहार के अलावा उनकी याद भी कोई नही करता ,पर किसी भी काम पर जाने से पहले यदि विधिवत उनकी पूजन हो तो क्यों नही उनका आशीर्वाद आपकी सफलता का मार्ग और सरल कर देगा.

5. छत पर और ईशान दिशा मे काम मे न आने वाली वस्तुए नही रखना चाहिये क्योंकि ईशान दिशा का बहुत आधिक महत्त्व हैं ,पर रखना ही पड़ जाए तो उसे दक्षिण दिशा की ओर रखना चाहिए ,ऐसा करने से से वाधाए कम होगी और लाभ की अवस्था बनने लगेगी.

6. घर की सुख शांति बनाए रखने के लिए काले कुत्ते को जो भगवान भैरव का वाहन माना जाता हैं उसे सरसों के तेल मे लगी रोटी और उसमे थोडा सा काली उडद की दाल मिलाकर खिलाए तो बहुत अनुकूलता होगी पर यह शनिवार को करना कहीं जयादा लाभदायक हैं.

7. ठीक ऐसा ही एक उपाय सदगुरुदेव जी ने बताया हैं कि मंगलवार को बंदरों को चने खिलाना ,ऐसा करने से भी घर मे सुख शांती बनी रहती हैं ,

8. यदि आप अपने विस्तर मे इस तरह से शयन करते हैं कि आपका सिर पूर्व दिशा की ओर और आपके पैर पश्चिम दिशा कि ओर रहते हो तो आध्यत्मिक अनुकूलता पाने के लिए यह अनुकूल उपाय होगा.

9. ठीक इसी तरह सिर यदि दक्षिणमे और उत्तर दिशा मे पैर कर के सोने से धन लाभ की स्थिति बनती हैं .पर इसके ठीक उलटे सोने से मानसिक चिंताए कहीं धिक होने लगती हैं .

10. घर से जब बाहर जाया जा रहा हो तब घर कि कोई भी महिला एक मुठी भर काले उडद या राई को उस व्यक्ति के सिर पर तीन बार घुमाकर जमीन पर डाल दे , तो जिस कार्य के लिए जाया जा रहा हैं उसमे सफलता मिलना प्रारंभ हो जाती हैं .

==

Totkas / Empiricism

1. Enlightening of 9 baati lamp in front of Bhagvati Laxmi image gives you wealth benefits.

2. If many problems occur in life and if you facing it again n again then mixing black sesame in the water which you take for bath may provide favourable condition.

3. In life many obstacles comes frequently and in search of solution we just just wander here and there. But on any moonless if you serve food to any poor person, gives clothes and some dakshina (cash).. This act gives happiness to our ancestors. And after getting their happiness your lives start getting easy and happier.

4. Somewhat same situation arises when our central deity gets angry on us. Commonly if we talk about them, it's a fact that they are just remembered just on any special occasion or festival. Apart from this occasion nobody remembers them, but before starting for any work if you do duly worship of them which make them happy and their blessings makes your success path easy.

5. One should not place unused things on terrace or in north east direction. Because north east direction keeps very importance, but if there is no option then you should arrange it in south direction this will reduce obstacles and created beneficial conditions.

6. For retaining happiness of home one can serve chapatti mixed of mustard oil and the dal made up of black gram/ urad cereal to black dog that is known as vehicle of lord Bhairav. By applying this solution condition gets favourable.

7. Exactly same solution was told by Sadgurudev, on Tuesday if you serve gram to monkeys will also enhance peace of house.

8. If you sleep in such a way were your head is in east direction and legs in west direction is favourable for your spiritual growth.

9. Exactly the same way if you head is in south direction and legs in north direction then it creates a wealth earning situations. But in contrary position it creates mental disturbance.

10. When you step out from home then any female member of family should take a fist full black gram/ urad or Reich and spin it on that person's head who is going out, so

आयुर्वेद : कुछ घरेलू उपाय

AYURVEDA : SOME TIPS

आयुर्वेद तो मानव जीवन के लिए वरदान हैं .पर इस वरदान का प्रयोग या जानकारी बहुत कम ही हुआ हैं . अगर इसके कुछ सरल सरल बाते भी इस्तेमाल की जाए तो भी आप पाएंगे की आपकी सौदर्यता मे कुछ ओर निखार तो आएगा ही .तो क्यों न कुछ बेहद ही सरल उपाय आपके लिए एक बार फिर ..

आयुर्वेद की महत्वता तो पूरा विश्व मानता हैं पर यह विज्ञानं भी आज अपने खोये हुये गौरव को पाने के लिए संघर्ष रत हैं , एक से एक अद्वितीय ग्रन्थ इस परम विज्ञानं के रहे हैं जो आज काल कवलित होते जा रहे हैं ,पर फिर भी जो अभी भी उपलब्ध हैं वह भी संजो के रखना चाहिए .निश्चय ही गंभीर रोगों मे उचित चिकित्सीय सलाह एक अनिवार्य अंग हैं उसे नाकारा नही जाना चाहिए ,और इस बात को गंभीरता से भी लेना चहिये ,पर कुछ सरल सरल सी बातों को हम भी अपने दैनिक जीवन मे परख सकते हैं .

1. शहद को कभी भी घी या तेल की बराबर मात्रा के साथ नही लेना चहिये ठीक इसी तरह से उसे गरम पानी या गरम दूध के साथ भी नही लेना चहिये.

2. आज के समय मे कमर दर्द एक आम सी बात हैं , लंबे समय तक लगातार सही ढंग से न बैठने पर यह हो जाना एक मामूली सी बात हैं .पर इस दर्द की अधिकता बहुत ही समस्या कारक हैं इससे से कैसे बचा जाए, कमर दर्द मे तारपीन के तेल की मालिश बहुत ही गुण कारी हैं.

3. लहसुन भी एक तेज एंटी सेप्टिक का काम करता हैं और जब कोई उपाय न हो तब इसे पानी मे पीस कर लगाने से घाव मे कीड़े आदि नही बनने देता हैं.

4. हल्दी तो बहुत गुणकारी मानी गयी हैं और इसके उपयोग से कौन न वाकिफ होगा .इसे बहुत बारिक पीस ले और गाय के दूध मे मिला ले और इससे चेहरे की हलकी हलकी मालिश करें और बाद मे हलके गुनगुने पानी से अपना चेहरा पौंछ ले, आप स्वयं अपना चेहरा देख कर आश्चर्य चकित हो जायेंगे.

5. फिटकरी और लौंग के गुण से आज सभी परिचित हैं इसके बराबर मात्र मे मिला ले और दाँत पर मले यह दांत दर्द के लिए बहुत गुणकारी हैं.

6. छाले हो जाने पर छोटी इलायची को बहुत महीन चूर्ण बना ले और उसे शहद के साथ मिलाकर लगाये , आराम होगा.

7. दाँतों मे पायरिया रोग होने पर यदि उचित लगे तो शहद की मालिश दाँतों पर करें और फिर गुनगुने पानीसे कुल्ला कर ले ,यह लाभकारी हैं.

8. लहसुन की एक कच्ची कलि भोजन के साथ खाना चाहिए यह लाभदायक हैं.

9. भोजन मे प्याज भी लेना चहिये खासकर सलाद आदि मे अगर कोई विशेष नियमों की रोक न हो तो ,यह भी स्वास्थ्य के लिए गुणकारी हैं.

10. त्रिफला चूर्ण को पानी के साथ रात को सोते समय लेने से कब्ज आदि की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता हैं.

==

Ayurveda for you..

Entire universe venerate the importance Ayurveda, even this science is also trying hard to reestablish its prestige. More than a unique texts of this science are been killed in today's date, but still whatever is available todays must be treasured and preserved. Definitely in severe disease the appropriate remedial measures play a significant role. And one should take this point on serious note. But some easy points can also be assay in daily routine life.

1. The honey should never be intake in equal quantity of oil or butter, exactly in a same way it should not be taken with hot water or hot milk.

2. In today's life waist pain is so common, sitting in wrong position for long time is cause of such pain and that's now become so normal also. But its excess pain is now severe issue. Now for escaping from such pain one can do a massage of terpene oil which seems favorable.

3. Garlic also works as antiseptic. And no other remedy is available then a mixture of garlic paste and water should be applied on wound. It prevents from insects etc.

4. Turmeric is recognized as very advantageous and I guess everyone is aware from its utility. Grind it minutely and mix it in cow milk, then do a facial massage by this paste. You will be surprise after seeing a miraculous effect by yourself.

5. From the properties of alum and clove everybody is familiar. Take it in equal quantity and massage it on teeth. It's extremely favorable in toothache.

6. When suffering from mouth ulcer, take powder of small cardamom and honey and apply it on affected area. You may get relief.

7. In disease like tooth sensitivity (Payoriya) it is advisable to do a massage of honey and then gargling by warm water. It is very useful.

8. In taking garlic clove while having food seems very beneficial.

9. One should have onion as salad if any conditions are not applied. It is also termed to be beneficial.

10. Taking Trifala powder in night time makes relief in disease like constipation.

In the End

आप सभी गुरु भाई बहिन और मित्रो के दिन प्रति दिन के बढ़ते हुआ स्नेह हमें लगातार और अधिक मेहनत को प्रेरित करता हैं अब ये अंक समाप्ति की ओर हैं, आपको ये अंक कैसा लगा , हम सभी को बिश्वास हैं की यह अंक आपके अपेक्षाओ पर खरा उतरा होगा .

इसी तरह हम सदैव आपके आशाओं पर खरे उतरें ,सदगुरुदेव भगवान से यही प्रार्थना हैं .

With the ever increasing /growing your support and love/sneh gives us more and more strength to work hard to come up to your expectation ,we here,have a faith that this issue come up your expectation, like that we work for you all is the prayer to beloved sadgurudev ji.

अगला अंक **मुस्लिम तंत्र एवं वनस्पतिक तंत्र महाविशेषांक**

होगा इसके विस्तृत विवरण के लिए ब्लॉग पोस्ट का इंतज़ार करे

Our next issue will be Muslim Tantra avam Vaanaspatik Tantra MAHAVISHESHANK for details of that plz wait for related post in the blog.

विगत अंक की भांति इस बार भी मैं अपने सभी गुरुभाई ,बहिनों से यही निवेदन करना चाहूँगा कि , इस इ पत्रिका ओर ब्लॉग के बारे में .. समान विचार धारा वाले व्यक्तियों को अवगत कराये / बताये .जिससे सदगुरुदेव जी के दिव्य ज्ञान से वे भी लाभान्वित हो सके .

Like in previous issue ,this time also make a deep request to you all as our guru brother and sister please inform other guru brother about this e magazine and blog.

Plz do visit blog

Nikhil-alchemy2.blogspot.com & yahoo group Nikhil alchemy

Our web site http://nikhil-alchemy2.com

We

Are praying to our beloved Sadgurudev ji

Specially on your

Sadhana Success , Spiritual Achievement and Material Growth

and

your devotion to Sadgurudev ji"

JAI SADGURUDEV